RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 2 अंक 10, मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

liverajsamand.com

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

हिन्दी मासिक पत्रिका

जून 2019

पेज संख्या : 36 राजसमंद

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

पुरानी ख्वाहिशों को नई उम्मीदें

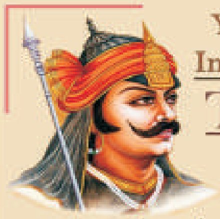

pratap the legend

You are Warmly Welcomed in the Haldighati the Inspiration for Patriotism, Sacrifice & Self Respect.

THE MAHARANA PRATAP MUSEUM

(India's First Live Museum)

Add.- Haldighati, Balicha, Nathdwara, District- Rajsamand (Rajasthan).
Contact- 02953- 299075, Mo.- 09928975040, 09799003405.

Dr. Mohanlal Srimali
(Founder)

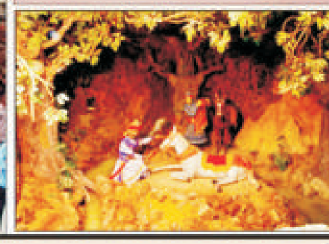

The Maharana Pratap Museum

Dr. Bhupendra Shrimali
Managing Director

Dr. Mohan Srimali Received a Award from Hon. President of India Smt. Pratibha Patil for Preservation of Historical Places, Culture & Patriotism Encouragement.

महाराणा प्रताप जयंती पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

जयवर्द्धन परिवार राजसमंद

उदयपुर, जयपुर, जोधपुर क्यों आपके शहर में सर्वश्रेष्ठ मंच | राजसमन्द में पहली बार सर्वश्रेष्ठ फैकल्टी एक ही मंच पर

संकल्प कोचिंग क्लासेज

रेनबो कलर लेब, छतरियों के पास, कांकरोली

:: संकल्प टीम ::

रिजनिंग - राकेश चौधरी, जितेन्द्र मीणा सर, जयपुर
शिक्षा मनोविज्ञान - सुरेन्द्र सांगवान सर, D.K. सिंघल
राजनीति विज्ञान - ओ.पी. सर, (संरक्षक), सुमेर सर
मैथ- जितेन्द्रजी, जयनारायणजी, संस्कृत - राजौरियाजी
हिन्दी - महेन्द्रजी झांझड़िया, श्रीमाली सर, उदयपुर
राजस्थान की कहानी - एस.एस. बैंसला की जुबानी
इतिहास- दीपकजी करोल, प्रदीप सर
साइंस - राजेन्द्रजी सोढ़ा सर, (गंगानगर)
अंग्रेजी - नन्दवानाजी, रेखाजी चावला
भूगोल - राजेन्द्र राठौड़ सर उदयपुर, अनिल दुल्लड़ सर

रतन सर-निदेशक

सभी प्रकार के कॉम्पिटीशन की तैयारी करवाई जाती हैं।

संरक्षक - O.P. सर मो. 9929728005, 8769820124, 9116987112

सम्पादकीय

पुनः राष्ट्रवाद की ओर भारत

देश की स्वाधीनता अपने साथ ही विखंडन का दंश लेकर आई। आजाद हिन्द फौज के भारत में बढ़ते कदमों से घबराकर अन्ततः अंग्रेजों ने भारत छोड़ने का मानस बना लिया था और इसको क्रियान्वित करने की कार्ययोजना बनाने में जुट गए। कतिपय कर्णधारों ने इस स्थिति को भांपकर **अंग्रेजों भारत छोड़ो** आन्दोलन प्रारम्भ किया, जिसकी परिणीति देश को धर्म के नाम पर अनावश्यक रूप से खंड- खंड होकर झेलनी पड़ी।

अफगानिस्तान की सीमाओं से लेकर बांग्लादेश और बर्मा (म्यांमार) तक अखंड भारत के स्वरूप की परिकल्पना आज भी हमारे हृदय को आनन्द से अभिभूत कर देने में सक्षम है। कश्मीर के तत्कालीन महाराजा द्वारा अधिविलयन संधि पर हस्ताक्षर होने के बावजूद स्वतंत्र भारत में धारा 370 व 35 जैसे विघटनकारी कानून से **आज़ाद कश्मीर** को अस्तित्व में लाया गया। प्रखर राष्ट्रवादी नेता सुभाषचन्द्र बोस को निर्वासन झेलना पड़ा।

अब शुरू होता है भारत को अंदर से खोखला करने का काम। गरीबी, बेरोज़गारी, निरक्षरता व अस्वच्छता का साम्राज्य विगत 60 वर्षों में निरन्तर फैलता गया। धर्म तथा जाति के नाम पर विघटन, आरक्षण तथा हिन्दुत्व का दमन जैसी नीतियों के साथ एक ही परिवार सर्वोच्च शासन तंत्र पर कुण्डली मारे बैठा रहा। हिन्दुओं के महानायक तथा भगवान कहे जाने वाले प्रभु श्री राम, जिनका नाम लेकर राष्ट्रपिता स्वर्ग सिधारे थे। उन्हें भी सम्मानजनक आश्रय प्राप्त नहीं हुआ और ना ही वे लोग उन्हें मस्जिद के साए से आज़ाद करा सके। देश की अस्मिता से खिलवाड़ अब आमजन को समझ में आ चुका है। देश का जन समुदाय, विशेष रूप से युवा वर्ग अब जाग चुका है। वर्षों से जंग खाई व्यवस्थाओं की चूलें हिल चुकी हैं। भारतवर्ष पहले से अधिक सशक्त, स्वच्छ और स्वाभिमानी होकर उभरा है। युवाओं में नई आशा और उमंग का संचार हो चुका है।

जनमानस में राष्ट्रवादी सोच विकसित हो रही है। प्रभु श्री राम अपने भव्य मंदिर में स्थापित हों। सम्पूर्ण कश्मीर भारतवर्ष का अभिन्न अंग हो। रोहिंग्या लौटें। देश में अमन-ओ-सुकून हो। कोई भी पड़ोसी राष्ट्र हमारी ओर कुदृष्टि डालने की हिम्मत न कर सकें। भरतखण्ड अपने अखण्ड स्वरूप को प्राप्त करें।

सभी को उज्वल भविष्य की शुभकामनाएं। नवीन भारत के उदय का बिगुल बज चुका है।

वन्दे मातरम्।

अतिथि सम्पादक

डॉ. आनन्द श्रीवास्तव
प्रभारी चिकित्सा अधिकारी
श्री राधिका हॉस्पिटल कांकरोली
मो. 94141-71606

सामाजिक अभिरुचि का पर्याय
जयवर्द्धन
website : liverajsamand.com

सम्पादक व प्रकाशक	ललिता राठौड़
निदेशक व उप सम्पादक	विजय शर्मा
सह सम्पादक	हितेन्द्रसिंह चौहान
सम्पादन सहयोगी	सूर्यप्रकाश दीक्षित, हेमेन्द्रसिंह
विज्ञापन प्रबंधक	जितेन्द्र शर्मा
संवाददाता	नरपतसिंह राठौड़
ग्राफिक डिजाइन	महेन्द्रसिंह मोजावत
फोटोग्राफी	भरत पालीवाल (श्रीराम स्टूडियो)
वितरण सहयोगी	नारायण पालीवाल, सुधीर दवे

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9950084705
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

संपादक, प्रकाशक एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स हस्तिनापुर, कांकरोली, जिला राजसमंद राजस्थान से मुद्रित।

नोट : पुस्तक में प्रकाशित हर सामग्री में यथासंभव सावधानी रखी। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद। किसी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

इस अंक में खास...

1. **कवर स्टोरी 1 :** पुरानी ख्वाहिशों को नई उम्मीदें — पेज- 4
2. **कवर स्टोरी 2 :** अपार जनाधार के बाद और अधिक होंगी जन अपेक्षाएं — पेज- 6
3. **कवर स्टोरी 3 :** नहीं रहे पूर्व सांसद हरिओमसिंह राठौड़ — पेज - 9
4. **कहानी :** अनकहे रिश्ते — पेज- 11
5. **धर्म :** कोल्हू का बैल — पेज - 12
6. **माटी का लाल :** पहलवान हुक्मीचंद पालीवाल — पेज - 14
7. **महाराणा प्रताप जयंती विशेष :** जीवंत किया इतिहास — पेज - 16
8. **रेजिंग अवेयरनेस** — पेज - 18
9. **गुमनाम शख्सियत :** करण- गोवर्धन — पेज - 19
10. **कविताएं** — पेज - 24
11. **तीखी मिर्ची :** वो महाराणा प्रताप कठे ? — पेज - 25
12. **कहानी :** अधूरी प्रेम कहानी — पेज -26
13. **व्यंग्य :** माइक की जुबानी — पेज -28
14. **मेरा गांव, मेरे लोग :** गणेशलालजी सरुपरिया, परसरामजी परसादिया — पेज- 31
15. **मेवाड़ी चौपाल :** राज रौ होकम — पेज - 34

पुरानी ख्वाहिशों को नई उम्मीदें

अब राज्य-केंद्र में विरोधी सरकारों में तालमेल और विकास चुनौती

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

राजस्थान में सत्ता बदलने के बाद केन्द्र में भी भाजपा (एनडीए) ने फिर सरकार बना ली। राजसमंद में फिर भाजपा के सांसद निर्वाचित हुए, पहले हरिओमसिंह राठौड़ थे, जबकि अब जयपुर राजघराने की दीया कुमारी को सांसद चुना है। नरेंद्र मोदी ने भी दूसरी बार प्रधानमंत्री की शपथ लेने के साथ ही केन्द्र सरकार ने नए सिरे से कामकाज शुरू कर दिया।

इस बीच राजसमंद की जनता के सपने और पुरानी ख्वाहिशों को फिर नई उम्मीद जगी है, नए विधायकों, सांसद के साथ राज्य गहलोत सरकार और मोदी सरकार से। राजसमंद झील को सदानीरा भरने का सपना, गोमती से ब्यावर तक अधूरे फोरलेन को पूरा करने का सपना, मावली से मारवाड़ तक ब्रॉडगेज कार्य पूर्ण होने के साथ राजसमंद, नाथद्वारा, कुंभलगढ़, भीम विधानसभा क्षेत्र के लोगों की क्षेत्रीय समस्याओं के निस्तारण की नई उम्मीद जगी है। जनता के अधूरे कार्यों को प्राथमिकता से पूरा करने का पहले सभी विधायकों ने वादा किया, तो अब नवनिर्वाचित सांसद दीया कुमारी ने फिर से दोहराया है। अब जनता इसी उम्मीद में फिर पुराने सपनों को साकार करने के लिए राज्य और केन्द्र सरकार से नई उम्मीद लगाए है।

जेहन में कई सवाल, समाधान की उम्मीद

अपनी वीरता, स्वाभिमान, शौर्य व बलिदानों की बहुत लम्बी फेहरिस्त रही है इस जिले की। राजस्थान का यह दूसरा जिला है जहां से राष्ट्र सेवा में शहीद होने वाले जवानों का प्रतिशत बहुत ज्यादा है। राजसमंद कृषि और खनिज संसाधनों से समृद्ध क्षेत्र होने के बावजूद विकास की दृष्टि से आज भी पिछड़ा क्षेत्र है। भूमिगत जलस्तर बहुत नीचे है। खनिज संसाधनों में यहां मार्बल, ग्रेनाइट एवं चूना पत्थर प्रमुख हैं। इसके अलावा दरीबा (रेलमगरा) में हिन्दुस्तान जिंक की खदान में जस्ता, चांदी, मैगनीज तथा लौह अयस्क की प्रचुरता है। इस क्षेत्र में बारिश अक्सर कम होती है तथा अंधाधुंध उत्खनन व वेस्ट स्लरी से पर्यावरण को बहुत नुकसान हुआ है। घटता जलस्तर व कटता वन क्षेत्र बहुत बड़ी समस्या है। विधानसभा क्षेत्रों में सड़कों की हालत बहुत खराब है, जिससे पर्यटन

लगभग चौपट हो गया है। राजनेताओं में इच्छा शक्ति व कार्ययोजनाओं का अभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। विश्व प्रसिद्ध कुम्भलगढ़ धरोहर हो या हल्दीघाटी, विकास के लिए आंसू बहाती नज़र आती है। कुम्भलगढ़ में सड़कों की खस्ता हालत तथा एक समुदाय विशेष के लोगों द्वारा ऐतिहासिक दीवार के आसपास अवैध आबादी क्षेत्र बनाकर बस्तियों को विस्तार देने से भी पर्यटकों को भयभीत करता है। समुदाय विशेष द्वारा पर्यटकों से गुण्डागर्दी, जबरन वसूली आम बात है। इन बस्तियों में लोग कहां से आ रहे हैं? कौन है ? आदि प्रशासन की जांच का विषय है।

अनूठा इतिहास, फिर भी बिसराया

धार्मिक और पर्यटन के लिहाज से राजसमंद जिले के विभिन्न शहर, कस्बों व गांवों का अनूठा इतिहास होने के बावजूद पर्यटक का विकास नहीं हो सका। नाथद्वारा में श्रीनाथजी मंदिर, चारभुजानाथ का मंदिर प्रमुख है। हल्दीघाटी जहां स्वामीभक्ति, स्वाभिमान, शौर्य की सीख देता है, तो दो सेनाओं के बीच महासंग्राम का साक्षी दिवेर युद्ध (मेराथन ऑफमेवाड़) भी इतिहास भी अनूठा है। करोड़ों रुपए खर्च होने के बावजूद इन स्थलों तक पर्यटकों की पहुंच सुनिश्चित नहीं हो पाई। इस कारण कोई उपयोगिता नहीं रह गई है। इसके पीछे मुख्य कारण कमजोर राजनीतिक इच्छाशक्ति है।

समस्याएं और समाधान

जिले के राजनेताओं और प्रसाशनिक अधिकारियों को दलगत राजनीति से ऊपर उठकर सर्वांगीण विकास के लिए ठोस योजनाएं बनाकर उन्हें क्रियान्वित करवानी होगी। यथा, जल संग्रहण योजना, वन विकास के साथ अवैध कटाई व पशु चराई पर रोक, बेहतर स्वास्थ्य सेवा, पक्की व गुणवत्तापूर्ण सड़कों का निर्माण, प्लास्टिक पॉलीबैग पर पूर्ण प्रतिबंध, मार्बल स्लरी के सदुपयोग करवाना। बाघेरी नाका जल परियोजना की तरह कुंभलगढ़ में वर्षों से लंबित बेड़च नाका जल परियोजना को लागू करना। राजसमंद के भूजल स्तर को बनाए रखने के लिए बाघेरी नाका की तरह ही देसूरी की नाल, काली घाटी, चारभुजा, काछबली क्षेत्र में चार बांधों के निर्माण कार्य प्रारम्भ करवाया जा सकता है। राजसमंद जिले को बड़े बांध व की दरकार है, ताकि मगरा मेवाड़ का जल व्यर्थ बहकर मारवाड़ की तरफ ना जा सके। मार्बल व्यवसाय को व जिले के विकास को गति देने के लिए अधूरे पड़े फोरलेन के निर्माण को गतिशील करवाना चाहिए। वनक्षेत्रों को उत्खनन के कारण बहुत नुकसान पहुंचा है। वन विभाग के कर्मचारियों को भी आधुनिक संसाधन उपलब्ध करवाने चाहिए, ताकी अवैध कटाई, चराई पर रोक लग सके। राजनेताओं को व प्रशासन को इस तरफ भी ध्यान देना चाहिए।

गोविन्द सिंह चौहान
भागावड़, भीम
मो. 9783207045

राजसमंद का सफरनामा

भारतीय राष्ट्र संघ के राजस्थान राज्य में एक जिला है राजसमंद। राजनगर व कांकरोली को मिलाकर राजसमंद शहर बना है। शहर और जिले का नाम मेवाड़ के महाराणा राज सिंह द्वारा 17वीं शताब्दी में निर्मित कृत्रिम झील राजसमंद झील के नाम पर रखा गया। उदयपुर जिले से अलग करके 10 अप्रेल 1991 को राजसमंद स्वतंत्र जिला घोषित किया गया। कृषि व खनन उद्योग के रूप में पहचान रखने वाला यह जिला आज भी मूलभूत सुविधाओं व सर्वांगीण विकास को तरस रहा है। इस जिले का कुल क्षेत्रफल 4768 वर्ग किलोमीटर है। 2011 की जनगणना के अनुसार इस जिले की आबादी 11,58,283 है, जो 17 प्रतिशत वार्षिक की दर से बढ़ रही है। भौगोलिक स्थिति 25.07, 73.88 पर स्थित है। यह जिला उदयपुर मण्डल में आता है। राजस्थानी लोक परम्परा व संस्कृति की छाप छोड़ने वाला संभाग है। भीम, देवगढ़, आमेट, कुम्भलगढ़, राजसमंद, रेलमगरा, चारभुजा, खमनोर व नाथद्वारा सहित नौ तहसीलें हैं। राजसमंद में चार विधानसभा क्षेत्र है। भीम, देवगढ़, कुम्भलगढ़, राजसमंद व नाथद्वारा है, जबकि 2008 में लोकसभा सीट का परिसीमन होने के पश्चात पाली जिले की जेतारण विधानसभा, नागौर जिले की मेड़ता व डेगाना व अजमेर जिले की ब्यावर विधानसभा सीट को मिलाकर आठ विधानसभा सीटों से राजसमंद की एक लोकसभा सीट बना दी गई। 2009 में यहां से कांग्रेस प्रत्याशी की जीत हुई तथा 2014 व 2019 में भाजपा प्रत्याशी विजयी हुए।

अपार जनाधार के बाद और अधिक होंगी जन अपेक्षाएं!

लोकतंत्र के महापर्व लोकसभा चुनाव 2019 का परिणाम आ चुका है। वैश्विक शक्ति बनने की ओर अग्रसर भारत ने फिर एक बार मोदी सरकार के नारे को चुना है। मैं वैचारिक रूप से अपने इस लेख में पूरे चुनाव का दृष्टिकोण और समूचे राजनीति का संक्षिप्त विश्लेषण प्रस्तुत कर रहा हूं। साल 2019 का ये आम चुनाव मोदी मैजिक और मोदी विरोध पर लड़ा गया और नतीजा हम सबके सामने हैं। भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में ऐसा 48 बरस बाद हुआ है कि 1971 का आम चुनाव व्यक्ति केंद्रित इंदिरा गांधी और इंदिरा गांधी के विरोध में लड़ा गया था। तब विपक्ष ने इंदिरा हटाओ का नारा दिया, लेकिन इंदिरा गांधी ने गरीबी हटाओ का नारा दिया और लोकसभा की 352 सीटें जीतीं थी। यह चुनाव मोदी पर केंद्रित हो गया। विपक्ष ने भी मोदी हटाओ का नारा दिया और मोदी ने गरीबी, भुखमरी, भ्रष्टाचार और परिवारवाद हटाओ का नारा दिया, जिसे जनता ने जनादेश में बदल दिया।

मतलब इतिहास दोहराया गया और एक नई इबारत लिखी गई। 2014 के लोकसभा चुनाव के चेहरे भी मोदी ही थे, लेकिन तब विपक्ष की घेराबंदी इस तरह की नहीं थी, जैसी इस बार हुई। सबसे ज्यादा सीटें देने वाले उत्तरप्रदेश में बीएसपी और एसपी ने गठबंधन कर लिया। चुनावी पंडितो ने इस गठबंधन को 100 में से 90 अंक दे दिए और दे भी क्यों ना। क्योंकि जातीय राजनीति करने वाली ये दोनो पार्टियां एक साथ, एक मंच पर दिखी, जिनका संयुक्त वोट शेयर 57 फीसदी था। कभी ये दोनो पार्टियां एक दूसरे की धुरविरोधी हुआ करती थी। इनका एक साथ आना, लगा कि भाजपा उत्तरप्रदेश में दस पंद्रह सीटों पर सिमट जाएगी, पर मोदी मैजिक ही था, जो महागठबंधन के बाद भी बीजेपी का प्रदर्शन लाजवाब रहा और 64 सीट जीत यहां भाजपा ने सबको चौंका दिया।

बात करें बाकी अन्य राज्यों कि तो वहां महागठबंधन के रूप में विपक्ष का विरोध ऐसा कि सारे मुद्दे गौण हो गए। चुनाव के केन्द्र बिंदु सिर्फ मोदी हो गए और मुझ जैसे कई विश्लेषक ये जानते हैं और मानते हैं कि यदि आप व्यक्तिगत अपशब्द या आलोचना में सारे जरूरी मुद्दे छोड़ मोदी मोदी करोगे, तो जनता भी मोदी मोदी ही करेगी। हुआ भी यहीं, क्योंकि विपक्ष लगातार मोदी मोदी कहकर हमलावर हुआ और मोदी जी इसी ताक में थे कि ये जनमुद्दे भूलकर मोदी को निशाना बनाए और बाजी पलट जाए। इसलिए मोदी मैजिक कामयाब रहा। नरेन्द्र मोदी का पिछला इतिहास यही बताता है कि वो विरोध के बावजूद भी भाजपा को संजीवनी देकर लाए और अपनी सरकार में जिस तरह पाकिस्तान को कड़ा जवाब दिया। पाकिस्तान में घुसकर एयर स्ट्राइक की, उससे ये संदेश गया है कि ऐसी स्ट्राइक मोदी ही कर सकता था।

उड़ी हमले के बाद सर्जिकल स्ट्राइक और बालाकोट में हुई एयर स्ट्राइक ने जनता का विश्वास मोदी सरकार पर और बढ़ा दिया और इस राष्ट्रवाद ने बड़ा जनमत तैयार कर दिया। बीजेपी का ये स्लोगन मोदी है, तो मुमकिन है, ने 2014 के स्लोगन अबकी बार मोदी सरकार को पीछे छोड़ते हुए एक मजबूत मंच तैयार कर नई पटकथा लिख दी।

कांग्रेस की खराब नीति और लचर नेतृत्व को देश की आम जनता ने पूरी तरह नकार दिया और ऊपर से कांग्रेसी नेताओं व प्रवक्ताओं की बदजुबानी ने कांग्रेस के लिए कोढ़ में खाज का काम किया। कांग्रेस के कुछ मनबढ़ राजनेताओं ने जमकर अपशब्द बोले तो कुछ बेतुके टीवी प्रवक्ताओं ने लाइव शोज पर कांग्रेस की ही किरकिरी कराई। कांग्रेस ने अपने मेनोफेस्टो में वादा किया कि कश्मीर से धारा 370 नहीं हटाई जाएगी। साथ ही पार्टी ने वादा किया कि वह सशस्त्र बल (विशेष शक्तियां) अधिनियम (अफ्सपा) 1958 में सुरक्षा बलों के अधिकारों और नागरिकों के मानवाधिकारों में संतुलन बनाने के लिए संशोधन करेगी। ये बात भारतीय जनमानस के गले नहीं उतरी और जनता ने कांग्रेस को विलेन मान लिया, जिसका परिणाम यह रहा कि सात राज्यों में कांग्रेस का खाता तक नहीं खुला।

वहीं 1 साल पहले जिन चार राज्यों में विधानसभा चुनाव जीते, वहा हालत बद से बद्तर हो गई, जिसमें मध्यप्रदेश, राजस्थान, कर्नाटक और छत्तीसगढ़ शामिल रहा।

दूसरी तरफ बीजेपी ने अपने संकल्प पत्र में संकल्प लिया कि जम्मू- कश्मीर से धारा 370 और धारा 35 को हटाने के लिए पार्टी कृत संकल्पित है। यही नहीं पुलवामा हमले के बाद मोदी सरकार ने अलगाववादी नेताओं की सुरक्षा वापस ली। उन पर कड़ा एक्शन लिया, उनकी टेरर फंडिंग की जांच जिस तरह से हुई, उससे ये संदेश साफ गया कि हमारे वोट से आतंकवाद पर चोट हो सकती है। ऐसा सिर्फ मोदी सरकार में ही मुमकिन है।

इसलिए पूरे देश में कांग्रेस के खिलाफ और बीजेपी के पक्ष में माहौल बना। मेरे विश्लेषण में मैं ये भी मानता हूं कि विपक्ष की हार और कांग्रेस की दुर्दश में नवजोत सिद्धू, राहुल गांधी, ममता बनर्जी, मणिशंकर अय्यर और सेम पित्रोदा की बदजुबानी की भी बहुत बड़ी भूमिका रही। मोदी सरकार जनता को ये भी संदेश देने में कामयाब रही है कि वो अच्छा कर रही, तभी विपक्ष एकजुट हो रहा। और तो और आतंकवाद को लेकर जीरो टोलरेंस की नीति है, भी कारगर रही।

संयुक्त राष्ट्र संघ में बार-बार चीन के वीटो के बाद भी मसूद अजहर को ग्लोबल आतंकी घोषित करना पड़ा। ये सीधे तौर पर मोदी सरकार की कूटनीतिक जीत थी और जनता में संदेश गया है, ऐसा कांग्रेस की सरकार में मुमकिन नहीं है, ये सिर्फ मोदी सरकार में ही मुमकिन है। कांग्रेस ने अपने मेनोफेस्टों में घोषणा की कि अगर वो सरकार में आए तो देशद्रोह की धारा 124ए को खत्म कर देगी यानी जनता में संदेश ये गया कि कांग्रेस की सरकार आने पर हर विश्वविद्यालय, गली- कूचे से टुकड़े- टुकड़े गैंग निकलने लगेंगे। जबकि बीजेपी का स्टैंड साफ था कि पार्टी टुकड़े टुकड़े गैंग देश में पैदा नहीं होने देगी। राष्ट्रहित सर्वोपरि है। इसलिए बीजेपी ने राष्ट्रवाद को मुद्दा बनाया और पार्टी इसमें कामयाब भी हुई। मोदी मैजिक के पीछे हिंदुत्व के मुद्दे ने भी बड़ा असर दिखाया। चुनावी सीजन में राहुल गांधी का जनेऊ पहनकर मंदिर- मंदिर जाना, उसके बाद पीर- मजारों पर जाना या प्रियंका का नदी नाव सैर, ये सब सियासी नौटंकी नजर आया। राफेल विमान डील पर राहुल गांधी कोई सही तथ्य नहीं दे पाए। हर रैली में राफेल डील पर उनके आंकड़े बदल जाते और चौकीदार चोर वाला मसला देकर राहुल खुद के पैरो पर कुल्हाड़ी मार बैठे। और तो और उन्हें सुप्रीम कोर्ट से भी फटकार मिली।

मोदी सरकार कई योजनाएं गेमचेंजर यानी वोट बटोरू साबित हुईं। ये सभी योजनाएं देश के दूर दराज के इलाकों में जमीन पर उतरी हुई नजर आई हैं। मसलन उज्जवला योजना, एससी एसटी एक्ट, मुद्रा योजना, जनधन, गांव-गांव में सड़क और बिजली पर काम, गरीबों के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना, किसानों को 6 हजार रुपए की सालाना सरकारी मदद और स्वच्छता अभियान ने जमीन पर जनमत बनाने का काम किया है। साथ ही गरीब सवर्णों को 10 फीसदी का आरक्षण जिसमें गरीब अल्पसंख्यकों को जोड़ा गया। इसके विपरीत कांग्रेस की न्याय योजना जिसमें गरीबों को 72 हजार रुपये सालाना देने की बात कही गई थी, पर जनता ने विश्वास नहीं किया। पीएम मोदी ने जनता में ये संदेश देने में कामयाब हो गए कि आज जहां वो स्टैंड कर रहे हैं, वो सिर्फ काम के चलते हैं। यानी वो कामदार हैं, लेकिन कांग्रेस अध्यक्ष सिर्फ नामदार हैं और वो जहां आज स्टैंड कर रहे हैं, वो सिर्फ खानदान के बल पर हैं। यानी राहुल ने ऐसा जमीन पर कुछ नहीं किया है, जो वो पीएम पद के लिए योग्य माने जाएं।

पीएम मोदी और अमित शाह ने अबकी बार 300 पार का दावा क्यों दिया। इसको भी समझने की जरूरत है। बीजेपी का ये दावा हवा- हवाई नहीं था, बल्कि पूरे आत्मविश्वास और सोच समझकर दिया गया नारा था। दरअसल 2014 के आम चुनाव में जब नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बने तो 312 सीटें ऐसी थीं, जिन पर जीत का अंतर 1 लाख से ज्यादा था। इनमें से 207 सीटें बीजेपी ने जीती थीं। इतना ही नहीं इनमें से 42 सीटों पर जीत का अंतर 3 लाख से ज्यादा था। इसी तरह 75 सीटों पर बीजेपी उम्मीदवारों को अपने प्रतिद्वंदी से 2 लाख वोट ज्यादा मिले। इसके अतिरिक्त 38 सीटों पर डेढ़ लाख वोटों के अंतर से जीत हासिल की थी। ये सभी सीटें मिलकर 207 बनती हैं, जो उसकी कुल सीटों का करीब 75 फीसदी। यानी बीजेपी को हराना है, तो इन सीटों पर पचास हजार से डेढ़ लाख तक वोटरों को बीजेपी से मुख्य विपक्षी पार्टी की तरफ शिफ्ट होना था, जो मुमकिन नहीं था। इसलिए बीजेपी ने अबकी बार 300 पार का नारा दिया था।

लोकतंत्र में जनता के फैसले से ऊपर कुछ जनता का फैसला बिल्कुल साफ है। प्रधानमंत्री पद के लिए नरेंद्र मोदी का कोई विकल्प नहीं है, कोई भी मोदी के आगे दूर- दूर तक नहीं दिख रहा। ये मैं पहले से कहता आ रहा हूं और ये अब देश की जनता ने एक बार फिर साबित भी कर दिया है। मैंने अपने निजी अनुमान में न्यूनतम 280 सीटें दी थीं, आखिरी दौर के चुनाव की 25 सीटों का अनुमान नहीं जता पाया था, मुझे ये कहने में कोई गुरेज नहीं कि न्यूनतम की जगह अधिकतम का आंकलन बताता तो शायद फंस जाता, क्योंकि जितनी सीटें आई हैं, उतनी का अनुमान शायद ही लगा पाता। 280 से कम नहीं आएंगी, ये मैंने बताया था और 22 की रात में ये भी बता दिया था कि नंबर्स जो भी आए, दोबारा सरकार भाजपा की बनने जा रही, न कि एनडीए की। इस चुनाव में मेरे अनुमान के मुताबिक इकलौती सीट गाजीपुर ऐसी रही, जहां का नतीजा ये नहीं होना चाहिए था। मनोज सिन्हा की सीट फंसी हुई, तो शुरू से दिख रही थी, लेकिन मुझे लगा था कि शायद काम के आधार पर वोटर्स आखिरी वक्त में जीत दिला दें, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

बाकी बिहार के बारे में तो यूपी से बड़ी जीत का अंदाज़ा था ही। अमेठी की बात करें तो वहां के लोगों के वॉक्सपॉप (आम वोटर्स की बाइट) शुरू से कंफ्यूजन वाले थे, मसलन हम तो राहुल गांधी के कारण जाने जाते हैं, लेकिन प्रधानमंत्री तो मोदी जी को बनना चाहिए टाइप्स, तो यहां कड़ा मुकाबला था। आखिरकार स्मृति ईरानी ने विरासत की सियासत को यहां से बेदखल कर दिया। हां रायबरेली में सोनिया गांधी को कोई दिक्कत नहीं हुई, कांग्रेस के लिए यही गनीमत है, वरना ज्योतिरादित्य जब गुना हार सकते हैं, तो रायबरेली भी जा सकती थी।

मोदी की आंधी ने यूपी में बुआ बबुआ और बिहार में आरजेडी के जातीय समीकरण को ध्वस्त कर दिया, जो बहुत जरूरी था, वर्ना जातिवाद की राजनीति ने इन दोनों राज्यों के विकास का बेड़ा गर्क कर रखा था। इनका जातिवाद भी सही अर्थों में जातिवाद का मुखौटा भर था, वर्ना परिवारवाद का ही बोलबाला था। मुलायम, शिवपाल, रामगोपाल, अखिलेश, धर्मेंद्र, डिंपल और इसके आगे समाजवाद खत्म। यही हाल बिहार में लालू, राबड़ी, मीसा, तेजस्वी, तेजप्रताप और यहीं तक सीमित सामाजिक न्याय। पप्पू यादव जैसे जमीनी नेता यादव होने के बावजूद लालू का राजनीतिक वारिस नहीं बन सके, पार्टी छोड़नी पड़ गई।

नवीन पटनायक की राजनीति ओडिशा तक सीमित है, अपने काम पर मेहनत करते हैं और फिर विधानसभा में जीत कर उनकी पार्टी आ रही है। किसी ने उन्हें ममता या नायडू या केजरीवाल की तरह राज्य छोड़कर केंद्र की राजनीति में, टकराव की राजनीति में उलझते नहीं देखा, नतीजा सबके सामने है। वजूद मिटना अगर किसी को कहते हैं तो वो है अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी, जितनी तेजी से उभरी, उतनी ही तेजी से डूबी। दिल्ली में पिछली बार सातों सीट पर नंबर 2 थी, इस बार सातों सीट पर नंबर 3, यानी विधानसभा चुनाव में सूपड़ा साफ होने के संकेत हैं। पंजाब से 4 सांसद थे, इस बार पंजाब में नंबर 4 पर पहुंच गई और अंत में उन मित्रों से कहना चाहूंगा जो मोदी के और ताकतवर होकर सामने आने से डर रहे हैं कि बेफिक्र होकर जैसे अपना काम करते हैं। वैसे ही करते रहें, मोदी के नाम पर जो असामाजिक तत्व डराएं, उनके बारे में आप खुद मोदी को बताएं, क्योंकि नतीजों के बाद कहा भी है कि सबको साथ लेकर चलूंगा, बदनीयती से काम नहीं करूंगा तो आप क्यों एकतरफा बदनीयती पाले हुए हैं और हां, तीन सौ पार तो हो चुका है, 500 पार भी हो जाए तो भी मुझे लगेगा कि मोदी या सरकार कुछ ऐसा कर रहे हैं, जो देशहित या जनहित में है, तो मैं वैसे ही लिखूंगा, जैसा लिखता रहा हूं। उम्मीद करूंगा कि वो भी वैसी ही टिप्पणी करें, जैसी करते रहे हैं, शब्दों के ताकि मोदी और मजबूत हो। सकारात्मक पक्ष यह रहा कि विगत के चुनाव मे जहां जातीय समीकरण और लोकल मुद्दे हावी रहते थे, वही इस बार लोगों ने केवल देशहित को ऊपर रखा। मुफ्ती महबूबा का चुनाव हारना, इस बात का सबूत है कि मुसलमान भी यह समझ गया है कि मुस्लिम धर्मगुरु और छद्म राजनीतिक ठेकेदार उन्हें मिथ्या बीजेपी भय दिखाकर अपनी राजनीति चमका रहा है। मोदी जी और अमित शाह जी ने जमीनी स्तर पर बिना बदजुबानी किए चुनावी रणनीति तैयार की, जिसका परिणाम यह रहा कि बंगाल की स्पीड ब्रेकर दीदी चुनाव नतीजो के बाद दुबक गई।

बड़े बड़े डींग मारने वाली ममता बनर्जी और समस्त विपक्ष यह भूल चुका है कि जनता कद की नहीं, देश की इज्जत करती है और जब चाहेगी आपको बोरिया बिस्तर उठवा के राजनीति से बाहर करवा देंगी। आगे सतर्क रहते हुए उम्मीद की जाएगी कि जितने भी ममता जैसे हिंसावादी राजनीतिक चेहरे है, वो खुद को संतुलित करेंगे और स्वच्छ राजनीतिक माहौल बनाने मे सहयोग करेंगे। मोदी जी को पुन: देश का प्रतिनिधित्व करने हेतु शुभकामनाएं और अब उनसे जनमानस की अपेक्षाएं और ज्यादा होंगी। मसलन देश में पानी की समस्या में सुधार, देश की शिक्षा व्यवस्था में पारदर्शिता व देश की और ऊँची वैश्विक प्रगति। समस्त भाजपा और नवनिर्वाचित सांसदों को मेरी तरफ से हार्दिक बधाई और बेहतर करने का आग्रह।

जय हिन्द

पंकज कुमार मिश्रा
सहायक प्रोफेसर, स्वतन्त्र टिप्पणीकार
जौनपुरी, 8808113709

शोक में डूबा राजसमंद, सहज-सरल और स्पष्ट कार्यशैली के पुरोधा हरिओम नहीं रहे

एक दशक में तीन दिग्गज नेता खोए

भाजपा के दिग्गज नेता नरेन्द्रसिंह सोलंकी का एक दशक पहले सड़क हादसे में निधन हो गया था, तो नाथद्वारा पूर्व विधायक का 21 फरवरी 18 में बीमारी के चलते निधन हो गया। अब 27 मई 19 को पूर्व सांसद हरिओमसिंह राठौड़ का निधन। ये तीनों दिग्गज नेता अपनी कार्यशैली, साफ छवि के लिए जाने जाते और पार्टी के साथ ही आमजन में भी अच्छी छवि थी। यह राजसमंद भाजपा के लिए बड़ा झटका है।

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

राजसमंद में भाजपा के दिग्गत नेता व पूर्व सांसद हरिओमसिंह राठौड़ का लंबी बीमारी के चलते 27 मई को उदयपुर के निजी अस्पताल में निधन हो गया। दूसरे दिन 28 मई को उनकी पार्थिव पैतृक गांव केलवा लाई गई, जहां पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, नेता प्रतिपक्ष गुलाबचंद कटारिया की मौजूदगी में अंतिम संस्कार कर दिया गया। अंतिम दर्शन के लिए सांसद दीया कुमारी, विधायक सुरेन्द्रसिंह राठौड़, किरण माहेश्वरी के साथ ही प्रदेश के कई भाजपा व कांग्रेस के नेता केलवा पहुंचे और शोक संतृप्त परिजनों को सांत्वना दी।

कॉलेज से राजनीतिक कॅरियर की शुरुआत करने वाले राठौड़ अंतिम समय तक सक्रिय रहे। उनकी साफ छवि, ईमानदारी व स्पष्ट कार्यशैली से हर कोई प्रभावित था। राजनीतिक जीवन में कई उतार चढ़ाव आए, मगर उन्होंने कभी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया और न ही उनके राजनीतिक कॅरियर में कभी कोई दाग लगा। दिग्गत नेता होते हुए भी हमेशा सादा जीवन जीया और कभी भी वीआईपी दिखाने का प्रयास नहीं किया। राजसमंद में जब भी आते, पुराना बस स्टैंड के पास राजकुमार अग्रवाल की दुकान पर बैठक कर साथियों से चर्चा करते बतियाते थे।

राठौड़ का राजनीतिक सफर

अखिल भारतीय द्यिार्थी परिषद से बीएन कॉलेज उदयपुर में चुनाव लड़े। फिर वर्ष 1980 में सुखाडिय़ा विश्वविद्यालय उदयपुर से अध्यक्ष चुने गए। वे राजसमंद जिले के पहले जिला प्रमुख वर्ष 1995 में बने। उससे पहले भी वे भाजपा में सक्रिय रहे। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में अच्छी छवि थी और प्रतिपक्ष नेता गुलाब चन्द कटारिया के अजीज मित्रों में थे। वे दो बार भाजपा जिलाध्यक्ष के साथ प्रदेश महामंत्री और प्रदेश उपाध्यक्ष भी रहे। वर्ष 2014 में लोकसभा चुनाव लड़कर वे पहली बार सांसद चुने गए।

राठौड़ का जीवन परिचय

जन्म : 1956

माता-पिता : गोविंद कंवर व फतहसिंह राठौड़

पुत्र- पुत्री : कर्णवीरसिंह व शिवानी तथा दो पौत्रियां

व्यवसाय : मुख्य रूप से वह मार्बल व्यवसायी

शिक्षा : सेन्टपॉल स्कूल उदयपुर व बीएन कॉलोज उदयपुर

पैतृक गांव : राजसमंद जिले में केलवा है, मगर शैक्षिक जीवन से ही उदयपुर में रहते थे। उदयपुर में अपना मकान भी है और करीब एक वर्ष से वे ज्यादातर उपचार के चलते उदयपुर में ही रहे।

डेढ़ साल से चल रहा था राठौड़ का इलाज

राठौड़ को 18 मार्च 2018 को बुखार आया। 2 दिन तक बुखार नहीं उतरा तो उदयपुर में जांच करवाई। 2 दिन उदयपुर रहे और उसके बाद दिल्ली एम्स में गए। वहां पता चला उनके अन्दरूणी गांठ हैं। गांठ की जांच हुई तो पता चला कि कैंसर है। इस पर मुंबई में डॉ. आडवानी ने उपचार शुरू किया। जिस पर 3 स्टेप थेरेपी में उपचार शुरू हुआ। 4 थेरेपी होने के बाद 19 मई 2019 को उदयपुर पहुंचे। 24 मई को पेशाब में दिक्कत हुई, जिस पर उदयपुर के निजी अस्पताल में भर्ती हुए। 26 मई रात हल्का खाना खाया और 27 मई सुबह भी नाश्ता किया। शाम करीब चार से पांच बजे के बीच उनका निधन हो गया।

मुख्यमंत्री- पूर्व मुख्यमंत्री ने दी श्रद्धांजलि

राठौड़ के निधन पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने राठौड़ को ट्वीटर के जरिए श्रद्धांजलि अर्पित दी। पूर्व मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे ने राठौड़ को एक नेक दिल इंसान बताया तथा भाजपा परिवार के लिए एक अपूरणीय क्षति बताई। राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सीपी जोशी ने राठौड़ के निधन को स्वच्छ राजनीति के क्षेत्र में संजीदा व्यक्तित्व खोने की अपूरणीय क्षति बताते हुए कहा कि उनके सरल व्यवहार के साथ जीवन पर्यंत राजनीति सभी के लिये प्रेरणादायी रहेगी। पूर्व देवस्थान राज्य मंत्री शिवदान सिंह चौहान, कांग्रेस जिलाध्यक्ष देवकीनंदन गुर्जर, नारायणसिंह भाटी, पूर्व विधायक हरिसिंह रावत, देवगढ़ के अजय सोनी आदि शामिल हुए।

कार पर सांसद नेमप्लेट तक नहीं

राठौड़ की सादगी ऐसी थी कि उन्होंने उनकी कार पर सांसद की प्लेट तक नहीं कभी नहीं लगाई। वे कभी भी वीआईपी की कतार में नहीं रहे। वे हमेशा आम व्यक्ति की जिन्दगी जीये।

हर शख्स की नम हो गई आंखें

अंतिम दर्शन के दौरान पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, गुलाबचंद कटारिया की आंखों से अश्रुधारा बह निकली। अंतिम संस्कार के दौरान हर शख्य की आंखें नम हो गई।

नाम की कभी नहीं रही ख्वाहिश

वर्तमान राजनीति में छोटे-मोटे कार्यों में भी अपने नाम की शीला पट्टिका लगाकर वाहवाही लूटी जाती है, वहीं इस आकर्षण से अछूते रहे राठौड़ ने **जयवर्द्धन पत्रिका के साक्षात्कार** में शीलालेख पर नाम अंकित नहीं करवाने के सवाल पर जवाब दिया था कि मैंने आज तक इन पत्थरों पर लिखे नामों में से किसी को अमर होते हुए नहीं देखा, परन्तु हो सकता है कि मेरी जगह गांव के प्रतिभावान बच्चों का नाम लिखवाने की जो मैंने कोशिश की है, जिससे अन्य बच्चों को भी प्रेरणा मिल सकती है और वे शैक्षिक उन्नत के अव्वल प्रयास कर सकते हैं। ऐसे में हो सकता है यह परम्परा कहीं ना कहीं जाकर अमर हो जाए।

अनकहे रिश्ते

अभी मंटो ने चूल्हे पर साग की पतीली चढ़ाई ही थी कि भीगी पतीली से सरक कर दो तीन पानी की बूंदें जलते हुए उपले की आग पर जा गिरी और छुन्न की आवाज के साथ ही आग बुझ गई और पूरी झोपड़ी में धुआं ही धुआं भर गया और वहीं एक कोने में लेटे दमा के मरीज मलखान की खांसी बढ़ गई।

दादी! छोटे बाबा पूछ रहे हैं कि खाना अभी बना या नहीं? मंटो के पांच साल के पोते ने कहा। हां हां बना रही हूं, देख नहीं रहा। यह आंख मुई जल ही नहीं रही और तुम भी बाहर जाकर धूप में नहीं बैठ सकते क्या? मंटो ने झुंझलाते हुए कहा।

खुल्ल... खुल्ल... खुल्ल अरी कहां बैठूं बाहर जाकर धूप है क्या? खुल्ल...। धूप नहीं है, तो धुआं भी तो नहीं है। कितना घुट रहा है और तुम्हारी खांसी। हां हां ठीक है, जा रहा हूं, कहकर खांसते हुए मलखान बाहर निकल गया। दादी! छोटे बाबा...। हां हां... तेरे छोटे बाबा... अभी बना रही हूं खाना। दादी आज चंदू कह रहा था कि उसके तो एक ही बाबा हैं और मेरे दो बाबा क्यों हैं?

पोते की बात सुनकर मंटो अचंभित नहीं हुई। क्योंकि वह जानती थी कि अब उसे तीसरी पीढ़ी को भी जवाब देने के लिए खुद को तैयार करना ही होगा।

जा अपने बाबा को खाना दे दे, मंटो ने थाली में दाल और दो रोटी रखते हुए कहा। कौनसे बाबा को दूं? पोते के प्रश्न से जहां मंटो को झुंझलाहट हुई, वहीं आंगन लीप रही बहु के होठों पर कुटिल मुस्कुराहट। छोटे बाबा को दे दें, अभी बड़े बाबा को भूख नहीं है।

मंटो को याद आया कि जब उसका बेटा मोहन इस पोते की उम्र का था, तब वह भी ऐसे ही प्रश्न किया करता था और वह बड़ी मुश्किल से उसको समझा पाती थी। जैसे जैसे वह बड़ा होता गया, पड़ोसी उनके घर में लड़ाई कराने के लिए मोहन को तेरे तो दो बाप हैं, कहकर चिढ़ाया करते थे और वह चिढ़कर कई कई दिनों तक मां और पिताजी से बात ही नहीं करता था। बहुत मुश्किल हो गया था, उसको समझाना इतना उग्र हो गया था कि सीधे मुंह बात ही नहीं करता था कभी। शादी के बाद तो जैसे कोई मतलब ही नहीं रहा था उसको। पत्नी के साथ दूसरे कमरे में रहने लगा था। अपने बेटे को भी दादी बाबा के पास जाने से रोकते थे, दोनों बहु बेटे।

मंटो मलखान के कपड़े बदलने लगी, वह लगातार खांसता जा रहा था और चोरी चोरी पत्नी के चेहरे के भाव भी पढ़ रहा था। क्या हुआ मंटो ? कुछ नहीं, दो आंसू निकलकर गालों पर लुढ़क गए।

मेरी वजह से पूरी जिंदगी तुम्हारे और छोटे के रिश्ते पर अंगुली उठती रही और मैं खुल्ल... खुल्ल... खुल्ल... कुछ नहीं कर पाया। मलखान रोते हुए बोला।

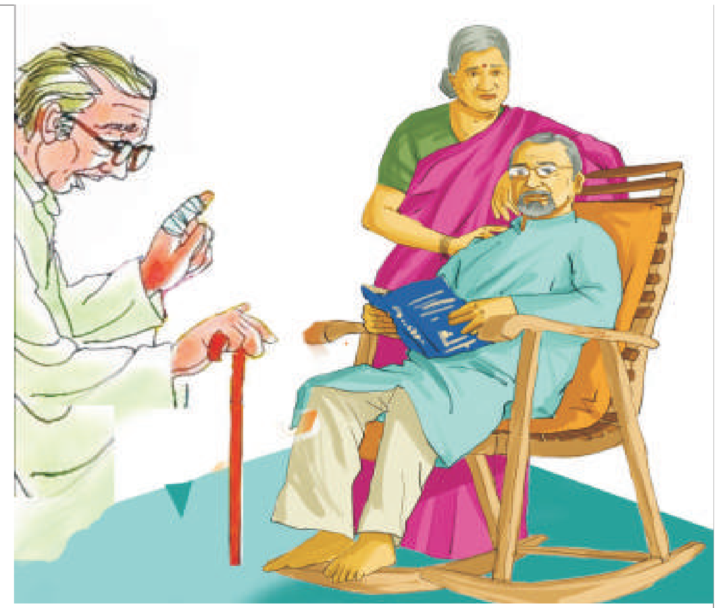

अरे दद्दा क्यों आंसू बहा रहे हो। भाभी मेरे लिए मां समान थीं और रहेंगी। छोटे जो कि लगभग पचपन वर्ष के थे, ने अपने बड़े भाई के पास बैठते हुए कहा।

वह तो छोटा है... अपने इतने बड़े बेटे के मन से हम अपने रिश्ते की कड़वाहट को नहीं मिटा सके। छोटे सिंह ने गहरी सांस लेते हुए कहा– याद है, भाभी जब विवाह कर आई, तब से अब तक तुमने मेरे व्यवहार में कोई परिवर्तन देखा, मंटो ने न में सिर हिलाया।

मंटो दोनों भाईयों के कपड़े धोने लगी, मलखान और छोटे के। और यादों में खोती चली गई।

जब उसका विवाह हुआ था, घर में सास और पति मलखान के अलावा देवर छोटे थे। कुछ दिनों बाद सास की जो कि अस्थमा की मरीज थीं। एक दिन भगवान को प्यारी हो गई। इधर धीरे धीरे मलखान भी अस्थमा की चपेट में आ गए। अब उनसे मजदूरी भी नहीं होती थी, ऐसे में घर की पूरी जिम्मेदारी छोटे के ऊपर ही आ गई।

मंटो बेहद खूबसूरत थी, ऐसे में पति की बीमारी और अभाव देखकर कई मौके परस्त पड़ोसी और रिश्तेदारों की घिनौनी नजर उसके ऊपर डोलने लगी।

छोटे को रिश्तेदारों ने बहुत समझाया विवाह के लिए, मगर उसने साफ इनकार कर दिया और भाई के परिवार को अपना समझ जिम्मेदारियों का निर्वाह करने लगा। ऐसे में सब मंटो और उसके रिश्ते को लेकर अंगुलियां उठाते रहे। भाभी, हमारा रिश्ता किसी को सफाई देने की जरूरत नहीं समझता क्यों दद्दा? छोटे ने भरे गले से कहा, तो मंटो और मलखान की आंखें भी भर आईं।

राशि सिंह
मुरादाबाद उत्तरप्रदेश

कोल्हू का बैल

मैंने सुना है– एक दार्शनिक, एक तार्किक, एक महापंडित सुबह– सुबह तेल खरीदने तेली की दुकान पर गया। विचारक था, दार्शनिक था, तार्किक था, जब तक तेली ने तेल तौला, उसके मन में यह सवाल उठा। उस तेली के पीछे ही कोल्हू का बैल चल रहा है, तेल पेरा जा रहा है। न तो उसे कोई चलाने वाला है, न कोई उसे हांक रहा है। फिर यह बैल रुक क्यों नहीं जाता? फिर यह क्यों कोल्हू पर तेल पेरे जा रहा है? जिज्ञासा उठी, उसने तेली से पूछा कि भाई यह राज मुझे समझाओ। न कोई हांकता, न कोई कोल्हू के बैल के पीछे पड़ा है, यह दिन– रात चलता ही रहता, चलता ही रहता, रुकता भी नहीं, क्यो ?

उस तेली ने कहा– जरा गौर से देखो, उपाय किया गया है, उसकी आंख पर पट्टियां बंधी हैं।

जैसे तांगे में चलने वाले घोड़े की आंख पर पट्टियां बांध देते हैं, ताकि उसे सिर्फ सामने दिखाई पड़े। इधर-उधर दिखाई पड़े तो झंझट हो, रास्ते के किनारे घास उगा है, तो वह घास की तरफ जाने लगे, इस रास्ते की तरफ नदी की धार बह रही है, तो वह पानी पीने जाने लगे। उसे कहीं कुछ नहीं दिखाई पड़ता, उसे सिर्फ सामने रास्ता दिखाई पड़ता है।

कोल्हू के बैल की आंख पर पट्टियां बांधी हुई हैं, उस तेली ने कहा। विचारक तो विचारक, उसने कहा– वह तो मैंने देखा कि उसकी वजह से उसे पता नहीं चलता कि गोल-गोल घूम रहा है।

ऐसे ही आदमी की आंख पर पट्टियां हैं, संस्कारों की, सभ्यताओं की, संप्रदायों की, सिद्धांतों की, शास्त्रों की। बचपन से ही हम पट्टियां बांधनी शुरू कर देते हैं। हमारी शिक्षा और कुछ भी नहीं है, आंखों पर पट्टियां बांधने का उपाय है, महत्वाकांक्षा की पट्टियां, कुछ होकर मरना। जैसे कोई कभी कुछ होकर यहां मरा है, प्रधानमंत्री बनकर मरना। जैसे कि प्रधानमंत्री बनकर मरोगे तो मौत कुछ तुम्हारे साथ भिन्न व्यवहार करेगी कि फिर तुम्हारी मिट्टी मिट्टी में नहीं गिरेगी और सोना हो जाएगी। कुछ धन छोड़कर मरना। जैसे धन छोड़कर मरने वाला किसी स्वर्ग में प्रवेश कर जाएगा। कुछ करके नाम कमाकर मरना। तुम्हीं मर गए, तुम्हारा नाम कितनी देर टिकेगा। कितने लोग आए और कितने लोग गए, क्या नाम टिकता है, किसका नाम टिकता है। सब पुछ जाते, साफ हो जाते हैं। समय की रेत पर पड़े हुए चरण चिह्न कितनी देर तक बने रहेंगे? हवा के झोंके आएंगे और मिट जाएंगे। हवा के झोंके न भी आए तो दूसरे लोग भी इसी रेत पर चलेंगे, उनके पैरों के चिह्न कहां बनेंगे, अगर तुम्हारे चिह्न बने रहे।

तो बड़े से बड़े नामवर लोग होते हैं और मिटते चले जाते हैं और उनके नाम भूलते चले जाते हैं। सब धूल में समा जाते हैं। इतिहास के पन्नों में कहीं कहीं पाद टिप्पणियों में छोटी मोटी जगह नाम छूट जाएगा। मगर उसका भी क्या मूल्य है। इतिहास की किताबें भी खो जाती हैं, जल जाती हैं, जला दी जाती हैं। आदमी कितनी सदियों से जी रहा है, इतिहास तो हमारे पास केवल दो हजार साल का है और जैसे जैसे इतिहास लंबा होता जाएगा, पुराना इतिहास छोटा होता जाएगा। क्योंकि नए को याद करें कि पुराने को। इसका क्या मूल्य है? अनंतकाल में इसका क्या मूल्य है? मगर आंख पर पट्टियां बांध देते हैं। प्रथम होकर बताना, छोटे बच्चे को कहते हैं। जहर डालते है उसमें, राजनीति भरते हैं उसके प्राणों में।

उस विचारक ने कहा– पट्टियां तो मुझे दिखाई पड़ती हैं, ठीक वैसे ही जैसे हर आदमी की आंख पर पट्टियां बंधी हैं। मगर फिर भी मैं यह पूछता हूं कि पट्टियां तो बंधी हैं, कोई हांक तो नहीं रहा है, यह चलता क्यों है? रुक क्यों नहीं जाता और तेरी तो पीठ है इसकी तरफ। उसने कहा– जरा गौर से देखो, मैंने इसके गले में एक घंटी बांध दी है। जब तक इसकी घंटी बजती रहती है। मैं समझता हूं कि बैल चल रहा है। जैसे ही इसकी घंटी बजना रुकती है, उछलकर मैं जाकर इसको हांक देता हूं। इसको कभी पता नहीं चल पाता कि हांकने वाला पीछे है कि नहीं। इधर घंटी रुकी और मैंने हांका। यह कोड़ा देखते हो बगल में रखा है, यहीं बैठे बैठे फटकार देता हूं तो भी यह चल पड़ता है।

विचारक तो विचारक, उसने कहा– यह भी मैं समझा। घंटी भी सुनाई पड़ रही है मुझे। यह भी तूने खूब तरकीब की, लेकिन मैं यह पूछता हूं कि यह बैल खड़ा होकर और गला हिलाकर घंटी तो बजा सकता है। तेली ने कहा– धीरे-धीरे। आहिस्ता बोलो, कहीं बैल सुन ले तो मेरी मुसीबत हो जाए। तुम जल्दी अपना तेल लो और रास्ते पर लगो। बैल न सुन ले कहीं तुम्हारी बात।

यह बैल इतना तार्किक नहीं है। बैल सीधा सादा बैल है। यह कोई दार्शनिक नहीं है, यह इतना गणित नहीं बिठा सकता कि खड़े होकर गला हिलाने लगे। यह तो सिर्फ चालबाज आदमी ही कर सकता है। साधारण आदमी तो कोल्हू का बैल है, चलता जाता है। उसकी आंखों पर पट्टियां बंधी हैं। उसे ठीक ठीक दिखाई नहीं पड़ता कि गोल घेरे में चल रहा है, नहीं तो रुक जाए। तुम वहीं करते हो सुबह रोज, वही दोपहर, वही सांझ, वही रात, जो तुम सदा करते रहे हो। तुम्हें कभी ख्याल में आया कि तुम एक वर्तुल में घूम रहे हो? वहीं क्रोध, वही काम, वही लोभ, वही मोह, वही अहंकार। तुम्हारे सुख और तुम्हारे दुख, सब पुराने हैं। वही तो तुम कितनी बार कर चुके हो और उन्हीं की तुम फिर मांग करते हो, फिर-फिर। तुम गोल वर्तुल में घूम रहे हो और सोचते हो तुम्हारी जिंदगी यात्रा है?

जरा एक वर्ष का अपना हिसाब तो लगाओ, जरा डायरी तो लिखनी शुरू करो कि मैं रोज- रोज क्या करता हूं और चार छह महीने में तुम खुद ही चकित हो जाओगे। यह जिंदगी तो कोल्हू के बैल की जिंदगी है। यह तो मैं रोज ही रोज करता हूं। वही झगड़ा, वही फसाद, फिर वही दोस्ती, फिर वही दुश्मनी। तुम्हारे संबंध, तुम्हारा जीवन, तुम्हारे रंग ढंग, सब वर्तुलाकार हैं। इसलिए तुम्हारी जिंदगी में कोई निष्कर्ष आने वाला नहीं है। तुम कहीं पहुंचोगे नहीं। तुम चलते- चलते मर जाओगे और फिर किसी गर्भ में पैदा होकर चलने लगोगे। इसलिए हमने इस वर्तुलाकार चक्कर का ही नाम संसार दिया है। संसार शब्द का अर्थ होता है- चाक, जो चाक की तरह घूमता रहे। तुम्हारी जिंदगी एक चाक की तरह घूम रही है। इसलिए ज्ञानी पूछते हैं- इस आवागमन से छुटकारा कैसे हो? इस चाक से हमारा छुटकारा कैसे हो? यह जो संसार का चक्र है, जिसमें हम उलझ गए हैं। इसको हम कैसे छोड़ें?

कठिनाई तो तब शुरू होती है, जब तुम्हारी जिंदगी में थोड़ी सी झलक मिलती है राह की। आंख तुम्हारी थोड़ी सी खुलती है, तुम्हारी पट्टी थोड़ी सी सरकती है आंख पर बंधी, तुममें थोड़ा होश आता है। क्योंकि तुम्हारे गले में भी घंटियां बंधी हैं और घंटियां बजती रहती हैं।

- **ओशो**

हार्दिक श्रद्धांजलि

मिलनसार, सरल व्यक्तित्व के धनी हमारे आदरणीय

श्री हरिओमसिंहजी राठौड़ सा.

(पूर्व सांसद राजसमंद) निवासी केलवा-राजसमंद के आकस्मिक निधन पर अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं

एवं परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें।

मांगुसिंह गौड़ - सरपंच

समस्त ग्रामवासी ग्राम पंचायत सेमल, पं.स. खमनोर, जिला- राजसमंद

हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधी जहां से आप जयवर्द्धन मासिक पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं एवं वार्षिक बुकिंग कर सकते हैं।

भीम - हीरालाल भाट मो 99296396015

देवगढ़ - अभिषेक माहेश्वरी, मो. 97856-85611

रेलमगरा - रोशनलाल टुकलिया मो. 9414927728

आमेट - मॉडर्न स्टेशनर्स, लक्ष्मी बाजार, आमेट

खमनोर - दिलीप श्रीमाली, मो. 99285-60237

गोमती चौराहा, चारभुजा- भीमराज कोठारी मो. 9610973283

बिनोल - हितेश दवे मो. 7023480406

कुंवारिया - विनय दाधीच मो. 7665005378

नाथद्वारा - कीर्ति स्टेशनर्स, नई सड़क

गजपुर - प्रभुदास वैष्णव मो. 7568485624

मोही - बाबूलाल कीर, मो. 98292-41423

राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर के साथ सभी अखबारों में विज्ञापन प्रकाशित कराने का एकमात्र स्थान

शक्ति एडवरटाइजिंग

सभी प्रकार की खेलकूद सामग्री मिलने का राजसमंद में एकमात्र स्थान

शक्ति स्पोर्ट्स

शास्त्री मार्केट, कांकरोली (राजसमंद)

94142-39648, 94144-73275

हष्ट-पुष्ट काया, विराट व्यक्तित्व के धनी थे पहलवान हुकमीचन्द पालीवाल

पौराणिक काल से ही कुश्ती का चलन रहा है, जब शस्त्रों का निर्माण नहीं हुआ, तब मल युद्ध हुआ करते थे। मानव हाथों से जोर आजमाइश किया करते थे और हार जीत का निर्णय होता था। धीरे धीरे सभ्यता का विकास हुआ और कुश्ती को खेल के रूप में समाज ने स्वीकार किया।

पुराणों में कुश्ती का उल्लेख मल्लक्रीड़ा के रूप में मिलता है। इन उल्लेखों से ज्ञात होता है कि इसके प्रति उन दिनों विशेष आकर्षण और आदर था। विशिष्ट उत्सव प्रसंगों पर राजा मल्लयुद्ध कराते और प्रसिद्ध मल्लों को आमंत्रित करते थे।

तब से पहलवानी और जोर आजमाईश और अखाड़ा संस्कृति के प्रति युवाओं का रूझान बढ़ा और लोगों के मनोरंजन करने के लिए पहलवान अखाड़ों में दंगल करने लगे। वैसे तो दुनियाभर में इस खेल को खेला जाता है और भारत में आज भी कुश्ती ग्रामीण से लेकर राष्ट्रीय स्तर का खेल है।

पंजाब, हरियाणा, राजस्थान तो पहलवानी और कुश्ती दंगल के गढ़ रहे है और बड़े बड़े आयोजन आज भी इन राज्यों में होते हैं तथा पहलवान जीत के तमगे पहनते हैं। नाथद्वारा कांकरोली भी पहलवानों और अखाड़ों की नगरी के रूप में जाना जाता है। मेवाड़ ने भी देश को अच्छे पहलवान दिए है। आज हम बात करते **माटी का लाल** कॉलम में कांकरोली के **श्री हुकमीचन्द पालीवाल** की, जिन्हें आज भी **हक्कू दा पहलवान** के नाम से शहर की जनता जानती है।

आपका जन्म 30 मार्च 1947 को (तिथि रामनवमी) के दिन पालीवाल समाज के कांकरोली नगर के प्रतिष्ठित परिवार में पिता श्री ऊंकारलाल जी और माता धापू बाई के पुत्र रत्न के रूप में हुआ।

खानदानी, रूतबेदार संपन्न व्यवसायी श्री ऊकार लाल जी (दवाई वाले) के नाम से प्रसिद्ध थे। उस जमाने में नगर में एकमात्र अंग्रेजी दवाई की दुकान आपकी ही थी। श्री ऊंकारलाल जी के चार पुत्रों में हुकमीचन्द जी तीसरे पुत्र थे। युवा अवस्था से व बलशाली और प्रतिभावान थे। 20 वर्ष की उम्र से ही कुश्ती और पहलवानी करने लग गए थे। जवानी में 110-20 किलो ग्राम वेट की कुश्ती में वे कांकरोली का प्रतिनिधित्व स्थानीय, जिला स्तरीय और राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में करते थे। उनके वेट की कुश्ती के पहलवान मेवाड़ क्षेत्र में बहुत कम थे। उन्होंने सन् 1968-69 में राज्य सरकार द्वारा आयोजित राजस्थान केसरी कुश्ती निर्भय सिंह (अजमेर) से 110 वेट की कुश्ती लड़ी और राजस्थान में द्वितीय रहे। उन्होंने भीलवाड़ा के मशहूर चांद पहलवान से भी कुश्ती लड़ी, नाथद्वारा के बड़ा तुलसी पहलवान को भी परास्त किया, तो उदयपुर के पहलवान माणिक जाट से भी जीत हासिल की। मोबेगढ़ अखाड़ा नाथद्वारा के रसिक पहलवान सन् 1964-65 में कुश्ती में एक मिनट में चीत कर दिया। उनके मित्र मुरलीधरजी ने बताया कि उस जमाने में हक्कू दा से कुश्ती लड़ने से पहले पहलवान को मुझसे जोरआजमाइश करनी पड़ती। मुझे हराने के बाद पहलवान उनसे कुश्ती लड़ सकता था। मैं एक तरह से उनकी ढ़ाल था। उन्होंने बताया कि एक बार हम चितौड़गढ़ के सोनी का अखाड़ा में कुश्ती लड़ने गए, तो हमारे नाम

से कोई कुश्ती लड़ने अखाड़े में नहीं उतरा। अजगर पंचमी को हर वर्ष कांकरोली मंदिर के बड़ा बाग अखाड़े पर दंगल होता था। वहां नाथद्वारा, कांकरोली के सभी अखाड़ों के पहलवान भाग लेते आप नया अखाड़ा की तरफ से भाग लेते थे। मदन छीपा, सुन्दर सेन आदि स्थानीय पहलवानो कुश्ती लड़ते थे। आप स्वभाव से भोले भाले सरल हंसमुख मस्तमोला थे। जिन्दगी को फकीराना अंदाज में जीते थे। हृष्ट पुष्ट काया के पहलवान होकर भी अन्दर से कोमल हृदय के विराट व्यक्तित्व थे। उदार स्वभाव, खुले दिल से दोस्तों पर जान छिड़कने वाले वैसे तो ये सभी से आत्मीयता रखते, मगर इनके अभिन्न मित्रों में श्री हरीवल्लभ गुर्जर, श्री मुरलीधर जाट, श्री राधेश्याम टेलर, श्री रामचंद्र कुमावत, श्री छन्नूसिंह चौधरी, श्री मांगीलाल तलेसरा सभी नामी पहलवान और नया अखाड़ा के सभी साथी पहलवान रहे। माणिक्यलाल जी गुर्जर (उस्ताद) इनको कुश्ती के गुर सीखाने वाले गुरुदेव थे। वैसे तो पहलवानो को सात्विक भोजन करने का शौक होता है और कसरत करने के बाद शरीर में पौष्टिक आहार की जरूरत भी होती है। हक्कू दा घर का बना भोजन ही करते थे। श्री द्वारिकाधीश मंदिर के प्रसाद के अलावा हक्कू दा पहलवान नियमित दूध पीने और पान खाने के शौकीन थे। कांकरोली में रामा बा के प्रसिद्ध (डाकला) उनकी पसंदीदा नमकीन थी। व्यसायिक कार्य स्थल (दुकान) पर दिनभर की मेहनत के बाद रोजाना दो रुपए दुकान से अपने खर्चे के ले जाते। दोस्तों के साथ शाम को नियमित बाजार में दूध पीते पिलाते थे।

कभी कभी शर्तिया खाने पीने की दोस्तों में मजाक मजाक में प्रतिस्पर्द्धा होती, तो हक्कू दा शर्त जीत जाते। आप कुशाग्र बुद्धि के भी थे। हायर सैकंड्री तक पढ़ाई करने के बाद खुद की दुकान में जो सर्राफा बाजार में थी। वहां फ्रेंड्स जनरल स्टोर नाम से चलाते थे। उस जमाने में जनरल स्टोर की वो मशहूर शॉप थी। आपके व्यवहार और व्यक्तित्व के कारण जेके टायर फैक्ट्री के ऑफिसर और कारिन्दे आपके नियमित ग्राहक थे।

हुकमीचन्द जी का विवाह इन्दौर निवासी सुश्री दुर्गादेवी से हुआ। ये बहुत सुशील और सीधी महिला थी। इनका स्वभाव हुकमी चन्दजी की तरह ही था। यूं कहे की पति पत्नी दोनों सीधेपन की प्रतिमूर्ति थे।

श्री जयसिंह जी राणावत ने बताया कि हक्कू दा इमली वाले बालाजी के परम भक्त थे और समाजसेवी भी थे। आपने सन् 1975- 76 में कपिराज मित्र मंडल का गठन किया और बचत समिति बनाई। मित्रों और परिचितों को उसमें सदस्य बनाया व बाजार के कुछ व्यापारियों को सदस्य बनाया और बालाजी के मंदिर का जिर्णोद्धार करवाया।

सेठ हरजीवन दास द्वारा बनवाए मंदिर के गेट जो पुराने हो चुके थे, उन्हें बदलवाए और उसकी जगह नए गेट बनवाए, बालाजी के चांदी का मुकूट बनवाया। नए वाद्य यंत्र मंगवाए और हर मंगलवार को भजन कीर्तन का आयोजन करवाना शुरु किया।

हर मंगलवार को नगरजन के सामने बालाजी मंदिर के बंद भेंट गोलक की बोली लगाई जाती, जो ज्यादा रुपए देता। उसे चिल्लर भेंट में दे दी जाती, जो 300 रुपए और 350 रुपए की होती थी, मगर श्रद्धाभाव से भक्तजन उसे 3-4 हजार रुपए या अपनी श्रद्धा अनुसार बोली छुड़वा कर दान स्वरूप मदद करते थे। चन्दों के पैसो से मंदिर को सुन्दर और भव्य बनवाया।

बंद गोलक के अन्तिम बोली श्री गौतम सनाढ्य ने लगाई, तब गोलक से 350 रुपए निकले थे। श्री गौतम ने 9500 रुपए देकर बोली छुड़वाई थी। ये परम्परा बाद में बंद कर दी। दान देने, लेने की यह परम्परा अद्‌भुत और अनूठी थी, जिसे श्री हुकमीचन्द जी ने शुरू किया। बालाजी महाराज के मंदिर की जिम्मेदारी श्री हुकमीचन्द जी ने अपने ऊपर तन, मन, धन से ले सारी व्यवस्था देखते थे। उन्हें कपिराज मित्र मण्डल का संरक्षक बनाया गया। श्री महावीर प्रसाद जी भण्डारी, श्री राम प्रसादजी सोनी, श्री महावीरजी बाबूजी (सेल टैक्स वाले) श्री जयसिंहजी राणावत, श्री वी.एस. चौहान आदि कार्यसमिति के स्थायी और सहयोगी सदस्य थे। हर मंगलवार को बालाजी के प्रसाद बनता और नगरजन को वितरण किया जाता।

हर वर्ष हनुमान जंयती पर विशाल सवारी

हाथी, घोड़े, बैंड, बाजों और लवाजमे के साथ निकलती थी। हक्कू दा की अगुवाई में इस समिति ने लगातार कई वर्षो तक आयोजन किया। हक्कू दा के असमय दुनिया से चले जाने से समिति दो वर्ष और चली। योग्य व्यक्तियों के हाथों जिम्मेदारी ना संभाल पाने के कारण इसे बाद में भंग कर दिया। लोक गीतकार और साहित्यकार श्री मांगीलाल जी अफंगी को हक्कू दा बड़े भाई सा मान देते थे और उनसे राय मशवरा लिया करते थे। कपिराज मित्र मण्डल का नामकरण भी श्री अफंगी ने उन्हें सुजाया, जो हक्कू दा को बहुत पंसद आया। हक्कू दा का असमय जाना अफंगी जी को भी सदमा पहुंचा गया। हक्कू दा की स्मृति में जब भजन संध्या रखी, तो श्री मांगीलाल जी अफंगी ने हक्कू दा की याद में एक भजन लिखा और गाया तो वहां बैठे मित्र मण्डली और श्रोताओं के नयनो से आंसुओं के झरने फूट पड़े। उस भजन के बोल ये है-

साथी हुक्मीचन्द सभी का अभिनन्दन
कपिराज मंडल के प्राण, उन्हें शत् शत् वंदन
सतसंगी बन साथ निभाय बनकर परम पुजारी
हिलमिल कर रहते थे सबसे सबसे समझ के दुनियादारी
इच्छाधारी करते सारी बाते प्यारी-प्यारी
बीमारी ले उड़ी छोड़कर के क्रन्दन
कपिराज मंडल के प्राण...
डटकर के दंगल में पहलवान की पदवी पाई
इस छोटी सी उम्र में भी क्या क्या रचना रचाई
करी भलाई प्रीत निभाई क्या क्या करे बढ़ाई
बांध सका ना तुमको कोई भव बंधन
कपिराज मंडल के प्राण...
इमली वाले हनुमत के मंदिर की पलटी काया
बुर्जनुमा मंदिर की मरम्मत करके कांच जुड़वाया
काला पत्थर और संगमरमर लगवा खूब सजाया
चांदी का सरताज ओ गोटा कर पूजन
कपिराज मंडल के प्राण...
शर्मा और पंवार अफंगी सतसंगी की धड़कन
छोड़ चले इस लोक, लोक इस छोड़ चले हो उलझन
कीर्तन भजन में सभा सदन में व्यापक एक ही उलझन
सियाराम मय सब जग जानी कर दर्शन
साथी हुक्मीचंद सभी का अभिनन्दन
कपिराज मंडल के प्राण, उन्हें शत शत वंदन
अफंगी साहब आज हमारे बीच नहीं रहे

उनके सुपुत्र दाऊलाल पालीवाल ने ये भजन उपलब्ध करवाया। आज भी इमली वाले बालाजी के मंदिर में उनकी

तस्वीर एक याद बन कर लगी हुई है। उसी परम्परा का निर्वाह करते हुए युवा पीढ़ी, नौजवान और उस बाजार के व्यापारियों ने इमली वाले बालाजी मंदिर को वर्तमान में और भव्य बना दिया है। हर मंगलवार भजन संध्या और हनुमान जयंती पर भव्य आयोजन किए जा रहे है, जिसमें छप्पन भोग का प्रसाद बनवा कर दर्शनार्थियों को वितरित किया जाता है।

कहते हैं अच्छे इन्सान की जरूरत ईश्वर के यहां भी होती है। वैसे जन्म मृत्यु पर किसी का बस भी नहीं चलता है। मृत्युलोक में आने और जाने का समय विधाता के हाथों लिखा जाता है, कितना जीये ये महत्वपूर्ण नहीं है। आपने जिन्दगी को कैसे जीया, यह महत्वपूर्ण बात है, मगर अपने इन्सान को खोने का गम सभी को होता है और जब हुकमीचन्दजी पालीवाल (हक्कूदा) का निधन अकस्मात ह्रदयघात से हो गया, तो उनकी मृत्यु का समाचार नगर में आग की तरह फैला तो नगरवासियों की आंखे नम हो गई।

17 जुलाई 1987 को मात्र 41 वर्ष की कम आयु में अपनी माता धापू बाई, पत्नी दुर्गादेवी, पुत्र भुपेन्द्र (कालू) पुत्री अनिता और दो अग्रज भ्राता श्री उमाशंकर, श्री दीनदयाल एवं अनुज श्री राजकुमार, दो बहने प्रेमदेवी, फूलादेवी भरा पूरा परिवार एवं उस्ताद गुरुजनों, मित्रों और कई शिष्यों को छोड़ संसार सागर से अलविदा कह गए, मगर नगरवासियों के दिलों में आज भी हक्कू दा का व्यक्तित्व स्मृति बनकर जेहन के पटल पर अंकित है। माटी का लाल कॉलम में आपके जीवन की उपलब्धियों को लिखकर अपने आपको गौरवान्वित महसूस करते हुए आपकी बेमिसाल शख्सियत को कोटि कोटि नमन करता हूं।

प्रस्तुति
सूर्य प्रकाश दीक्षित
काव्य गोष्ठी मंच कांकरोली
मो. 9414621730

बलीचा में संग्रहालय ने जीवंत कर दिया महाराणा प्रताप का इतिहास

सन् 1576 की हल्दीघाटी युद्ध में मेवाड़ के महाराणा प्रताप ने मुगल बादशाह अकबर की सेना से लोहा लेते शौर्य का इतिहास रचा एवं इस लड़ाई में घायल चेतक ने अपने स्वामी महाराणा प्रताप को अरावली दर्रे में सुरक्षित नाला पार कर उनकी जान बचाई और स्वयं इस दुनिया से विदा हो गया। स्वामीभक्त घोड़े चेतक की याद में इस स्थान पर एक छतरी आज भी बनी हुई है, जिसे चेतक स्मारक के नाम से जाना जाता है। कई वर्षों तक उपेक्षित रहे इस स्थान की जब सरकार व संस्थाओं ने कोई सुध नहीं ली, तो उदयपुर के सेवानिवृत अध्यापक मोहनलाल श्रीमाली ने राष्ट्रीय महत्त्व के इस स्थान को विकसित करने का बीड़ा उठाया और अकेले ही भागीरथी प्रयास में जुट गए। महाराणा प्रताप के शौर्य एवं बलिदान की कहानी तथा हल्दीघाटी के इतिहास को जन जन तक पहुंचाने का संकल्प लेकर इस स्थान पर संग्रहालय बनाने का कार्य हाथ में लिया और खुद की 7 एकड़ भूमि पर महाराणा प्रताप के जीवन आधारित प्रसंगों पर विभिन्न तरह के मॉडल विकसित कर इतिहास को संरक्षित किया।

इस कार्य में उन्हें अपनी सेवाकाल की संपूर्ण पेंशन व बचत के अलावा बैंक से कर्ज लेने के बावजूद अपना मकान तक बेचना पड़ा, लेकिन दृढ़ संकल्पित श्रीमाली ने हार नहीं मानी और हल्दीघाटी को विकसित करने में वह कर दिखाया, जो सरकार नहीं कर सकी। गांधीनगर के अक्षरधाम से प्रभावित होकर उसी तर्ज पर अपने संरक्षक, स्वतंत्रता सेनानी व संविधान सभा के सदस्य बलवंतसिंह मेहता से प्रेरित होकर इस परिसर का डिजाइन स्वयं तैयार किया। अब यहां महाराणा प्रताप की जीवंत झांकियां देखने के लिए देस, विदेश के पर्यटकों का तांता लगा रहता है।

संग्रहालय में ये खास

- प्रताप के जीवन कि प्रमुख घटनाओं को दर्शाते सेट और प्रतिमाएं
- ऑटोमेटिक लाइट एंड साउंड शो (हलचल करती मूर्तियां) मॉडल
- प्रताप के जीवन पर आधारित थ्रीडी एनिमेशन शोर्ट फिल्म प्रदर्शन
- लुप्त होती राजस्थानी कला संस्कृति के सरंक्षण का हेरिटेज संग्रहालय।
- मेवाड़ के वीर वीरांगनाओं की आर्ट गैलरी।
- पांच किमी. क्षेत्र में फैले हल्दीघाटी व युद्ध स्थल दर्शाता मॉडल।
- संग्रहालय से पर्यटन और हल्दीघाटी क्षेत्र को जीवनदान मिला।
- प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से 2 हजार लोगों को रोजगार मिला।
- संग्रहालय की शुरूआत में यहां मात्र 20 हजार पर्यटक आते थे, पर अब यहा हर वर्ष 6 लाख पर्यटक आने लगे हैं।
- संग्रहालय संस्थापक डॉ. मोहन श्रीमाली को एतिहासिक धरोहर संरक्षण, समाज सेवा और देश भक्ति भावना जागृत करने के कारण राष्ट्रपति सम्मान, राज्य स्तर, जिला स्तर, स्थानीय स्तर और अन्य कई संस्थानो ने सम्मानित किया है।
- पर्यटको के लिये ऑडियो गाइड की सुविधा उपलब्ध है।

देशभक्ति का संचार ही मुख्य ध्येय

हल्दीघाटी युद्ध की जानकारी, महाराणा प्रताप के संघर्ष, शौर्य, त्याग, तपस्या की गाथा से देश के लोगों में देशभक्ति की भावना जागृत करना ही इस संग्रहालय का मुख्य उद्देश्य है। महाराणा प्रताप और हल्दीघाटी क्षेत्र को विश्व स्तर पर पहचान दिलाने के लिए और निरंतर पर्यटक संख्या में वृद्धि के समावेश और सुविधा के लिए संग्रहालय का विस्तार जारी है।

Be Healthy

An old saying is HEALTH IS WEALTH as wealth can't get us health. What is health? The state of being well and free from illness? No. Health is a state of complete physical, mental, social and spiritual well being and not simply the absence of any disease. There are types of health we need to know about. These are-

- **Physical Health**
- **Mental/Intellectual/Emotional Health**
- **Spiritual Health**

Physical health is the essential aspect of human life as this is the only mode, we are blessed with to make anything and everything happen in this world and so it is important to keep this body fit and healthy. Healthy food, balanced diet, regular exercise and yog helps us to remain healthy. Let's be careful, remove junk food from our diet, eat healthy, work out daily without fail and perform yog. A fit body and well health are not just dream but it is a process through which anyone can avail a healthy & fit body.

Mental health includes a person's emotional, social and psychological wellbeing. This is closely connected with our physical health. Mental health is not just the absence of stress, depression, anxiety, or any disorder but it's the ability to be balanced and enjoy the life. How we face the challenges of our life, how we respond to the problems, how we handle the situations, shows our mental health status. Reading of good books, meditation & yog helps us keep mentally healthy.

Spiritual health is that important aspect of our life which leads to all other health in the right direction if this is physical or mental. Spiritual wellness is a personal matter involving values and beliefs that provide a purpose in our life & connects us to supreme power. Prayer and meditation are two practices, associated with spiritual health which makes a difference in life if practiced daily. Upasana, Sadhana & Aradhana is the key to spiritual health.

Overall health can be positively impacted by high levels of spiritual health. Levels of spirituality if are higher, brings positivity, inner peace, compassion, letting go attachment, fills joy and happiness and moreover satisfaction in life. A set of rules for ourselves and belief will definitely make a change in physical, mental and spiritual health.

Manisha Lashkari
Principal
Smart Study
International School

डूबती जिन्दगी का सहारा गोवर्धन-करण

आज हम गुमनाम शख्सियत में ऐसे दो लोगों की कहानी को आपके सामने लाने का प्रयास कर रहे हैं। जो सच में आज तक भी गुमनाम की जिंदगी ही जी रहे हैं। राजसमंद जिले के कांकरोली में रहने वाले दो दोस्तों की ऐसी मिसाल है, जो सच में समाज सेवा का एक जीता जागता उदाहरण है। रेती मोहल्ला, कांकरोली के गोवर्धन वैष्णव पिता शालिग्राम वैष्णव और करणसिंह पंवार पिता कालूसिंह जो विगत 25 वर्षों से कई डूबती जिंदगियों को बचाने का काम कर रहे हैं। श्री द्वारकाधीश मंदिर के पास रहने वाले यह दोनों शख्स बचपन से ही राजसमंद झील मैं अपने गुरु दामजी सुदाम का आशीर्वाद और श्री गौतमजी सनाढ्य के सानिध्य में तैराकी के गुर सीखें और उनकी इसी कला को श्री विनोद जी सनाढ्य ने आगे बढ़ाया।

बचपन से ही गरीबी का आवरण ओढ़े हुए जिंदगी ऐसे ही चल रही थी। राजसमंद झील में मौज मस्ती करना उनके स्वभाव में था। श्री द्वारकाधीश के दर्शन करने वाले यात्रियों का झील में कुछ सामान गिरने पर यह उसे खोजकर लाते थे। पानी के अंदर धीरे- धीरे उनका डर कहीं खो गया और पानी के यह जांबाज सिपाही बन गए।

25 वर्षों पहले इस झील में एक नाव चला करती थी, उसको गौतमजी सनाढ्य संचालित करते थे। घर की माली हालत ठीक नहीं होने पर यह दोनों उस नाव को चलाने का काम करने लग गए। एक बार उस नाव से एक बालक गिर गया, तो तुरंत ही गोवर्धन ने पानी में छलांग लगा दी और उसे बचाकर किनारे पर ले आया। गोवर्धन और करण की जोड़ी आज जिलेभर में कहीं पर भी कोई पानी संबंधित दुर्घटना होती है, तो प्रशासन द्वारा पानी में डूबे हुए लोगों को बचाने और उनका मृत शरीर बाहर निकालने के लिए उन्हें ले जाया जाता है। अभावग्रस्त जीवन यापन करने वाले इन दोनों युवकों ने कभी भी प्रशासन और लोगों से कभी कोई पैसे की मांग नहीं की, बल्कि वह यहीं कहते हैं कि हम यह कार्य इसलिए करते हैं कि व्यक्ति जब जिंदा नहीं रहता है, तो उनके घर वाले उसके मृत शरीर को पाने के लिए तड़पते हैं, उनकी तड़प हमसे देखी नहीं जाती हम कुछ भी करके कुछ शरीर को पानी से बाहर निकालने की पूरी पूरी कोशिश करते हैं।

कई बार तो मृत शरीर पानी में रहने के कारण इतना गल जाता है कि उसमें से भारी सड़ांध निकलने लगती है, बॉडी को जब ये पकड़ते हैं, तो उनके कई अंग हाथों में आ जाते हैं, यह स्थिति बहुत ही विकट होती है।

An ISO -9001:2015
M. 9829445469, 9929495228
शाईन कम्प्यूटर्स
RKCL
IT shapes future
(Rajasthan Knowledge Corporation Limited)
C.F.A (Tally)
पूर्ण व्यवसायिक कोर्स
GST/Tally ERP
SHiNE
RS-CIT
Tally पूर्ण व्यवसायिक कोर्स
DCA
PGDCA
PDCA
Spoken English
राजसमन्द का नं. 1 कम्प्यूटर संस्थान
शास्त्री मार्केट, कांकरोली फोन नं. 02952-220469
शीतला माता मंदिर के पास, राजसमंद फोन नं. 02952-220228

इन्हें डूबते लोगों को बचाने में महारत हासिल है, लेकिन कभी कभी ऐसा भी होता है कि डूबने वाला इन्हें कसकर पकड़ लेता है, तब इनको सावधानी बरतते हुए स्वयं को भी बचाना और उस व्यक्ति को भी बचा कर बाहर निकालने की चुनौती बहुत कठिन होती है। यह अपनी जान पर खेलकर लोगों की जिंदगी बचाने का हर संभव प्रयास करते हैं और उसे बचाकर बाहर ले आते हैं। इन्होंने लोगों की जिंदगी बचाने में अपनी जिंदगी को ही न्यौछावर कर दिया है।

श्री द्वारकाधीश मंदिर में भारत के हर हिस्से से दर्शनार्थी आते हैं और राजसमंद का पानी देखकर वह अपने आप को रोक नहीं पाते हैं। इस स्थिति में हम वहां खड़े होकर अपनी पैनी निगाहों से स्थिति को संभाले रखते हैं और उन लोगों पर हमारी नजर टिक जाती है, जो अनभिज्ञ होते हैं और पानी में उतर जाते हैं। कई वर्षों से हमने कई डूबने वालों को बचाया है। यह दोनों छोटे बच्चों को तैराकी के गुर भी सिखाते हैं और उन्हें तैरने की कला में पारंगत भी करते हैं। झील में अवैध मछली पकड़ने वालों की कई बार इन्होंने उनकी जाल को तालाब से निकाल कर जलाया है।

द्वारकाधीश मंदिर के बाहर ही गोवर्धन अस्थायी रूप से एक सोडा शिकंजी की थड़ी लगाता है और करण होमगार्ड में अस्थायी रूप से कार्य करता है। पिछले वर्ष राजसमंद कलक्टर आनंदी ने आपदा प्रबंधन में अस्थायी नौकरी प्रदान की, लेकिन वहां भी उनको सिर्फ6 महीने ही कार्य मिलता है, जिससे भी उनका गुजर बसर मुश्किल ही चल पाता है। इनको एक बार राजसमंद पुलिस अधीक्षक द्वारा सम्मानित किया और तीन बार जिला स्तर पर दोनों सम्मानित हो चुके हैं, लेकिन यह कहते हैं कि सम्मान से पेट नहीं भरता कई बार तो ऐसा भी घटित हुआ कि प्रशासन घटनास्थल पर इन्हें अपने वाहन से ले जाते, मगर कार्य होने के बाद वहीं छोड़कर अफसर चले जाते। प्रशासन की इस तरह की अनदेखी में भी इन्होंने कभी अपना हौंसला नहीं टूटने दिया और निरंतर सेवा कार्य में तल्लीन रहे। इन्होंने बांसवाड़ा, उदयपुर, लाखेला तालाब, सरदारगढ़, सेमा ढाबुन, बाघेरी नाका, सांसेरा, नंदसमंद, नाथद्वारा, भीम, रामदरबार, देलवाड़ा, केलवाड़ा, खारी फीडर और कई जगह लोगों को बचाने का कार्य किया है।

जिले में 58 छोटे बड़े नाड़ी तालाब है, लेकिन विडम्बना यह है कि ना तो बचाव के उपकरण है और ना ही एक भी ऑक्सीजन मास्क सिलेंडर है। ये कहते हैं कि हमारी जहां ड्यूटी लगती है, वहां हमारा ऐसा कोई कार्य नहीं होता है, हमने कई बार कहा है कि हमको झील किनारे एक चौकी बनाकर स्थायी कर दो, जिससे लोगों को दुर्घटना होने पर उन्हें बचाया जा सके, लेकिन बड़े अधिकारियों को यही कहते हुए पाया है कि तुम अपना सिर्फ कार्य करें। दुर्घटना स्थल से जो भी कॉल आएगी, उसके बाद ही हम वहां तुम्हें भेज सकते हैं।

झील के प्रति गोवर्धन की आस्था इतनी थी कि उन्होंने प्रतिज्ञा ली थी कि जब तक झील पूरी तरीके से लबालब नहीं हो जाती, तब तक वह पैरों में जूते नहीं पहनेगा। आखिर यह मनोकामना उनकी 26 वर्ष के बाद पूरी हुई। फिर विधायक किरण माहेश्वरी के साथ गोवर्धन ने भी द्वारकाधीश मंदिर से चारभुजा तक पैदल यात्रा की, जहां विधायक ने हाथों जूते पहनाए। कई बार नगरपरिषद के गणपति विसर्जन आयोजन में भी इनको बुलाया जाता है, लेकिन इनको कोई मानदेय नहीं दिया जाता है।

इन्होंने अपनी जिंदगी लोगों को बचाने की खातिर निकाल दी। आज भी हालात इनके घर के बद से बदतर हुए जा रहे हैं। गरीबी इनके घरों में आज भी पसरी हुई है, न सरकार का, न स्वयंसेवी संस्थाओं का इनकी तरफ ध्यान जाता है। बस इनकी यही ख्वाहिश है कि राजसमंद झील पर अवैध मस्याखेट को रोका जाए। झील में एक नाव संचालित हो, नौ चौकी, मंदिर जलघरा घाट और एरिगेशन पर स्थायी रूप से बचाव दल की नियुक्ति की जाए, जिससे जल डूबने के हादसे ना हो।

कहा जाता हैं कि डूबते हुए के लिए तिनके का सहारा भी बड़ा महत्वपूर्ण होता है, मगर जिन्होंने अपनी जान की परवाह किए बिना लगभग दो सौ से अधिक डूबते हुए लोगों का सहारा बनकर किनारे पर पहुंचाया है। उन सपूतों को एक तिनका समझकर अनदेखी की जा रही है। प्रशासन या अन्य संस्थाएं इनके हुनर का सिर्फ इस्तेमाल करते हैं, मगर इन्हें स्थायी रोजगार तक देने में पुलिस व प्रशासन नाकाम रहा।

ये जांबाज समुंद्र की गहराई में तो जाते ही है, लेकिन आसमान की ऊंचाई में भी लोगों की मदद करने के लिए हर समय तैयार रहते हैं। कुंभलगढ़ क्षेत्र के मजेरा में 25 जनवरी 2019 को एक व्यक्ति कारण मोबाइल टावर पर चढ़ गया, उसे काफी समझाने पर भी वह नहीं उतरा, तो गोवर्धन और करण से जब संपर्क साधा, तो वे दोनों वहां पहुंच गए और अपने साहस और समझदारी से उस व्यक्ति को सकुशल नीचे उतारा

इन हालातों में आज भी यह दोनों निरंतर अपनी निशुल्क सेवा देने में कतई पीछे नहीं हटते हैं। इनका हौसला देखते हुए हमें इन पर गर्व होता है। कांकरोली की ऐसी गुमनाम शख्सियत को हम सलाम करते हैं।

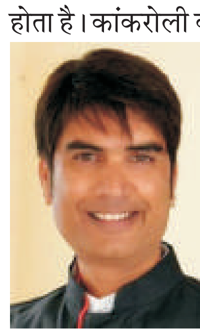

राहुल दीक्षित
काव्य गोष्ठी कांकरोली
राजसमंद, 90010-11755

करें मंथन, लिखे अपने विचार

मंथन में हमारा प्रयास रहता है कि समसामयिक विषय पर अपने पाठकों की राय जान सकें। ये कॉलम सार्वजनिक मंचों के माध्यम से प्राप्त पाठकों के विचार प्रस्तुत करता है। इसी कड़ी में इस माह का सवाल...

सवाल इस प्रचंड बहुमत के बाद मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल की सबसे अहम प्राथमिकता क्या व क्यों होनी चाहिए?

मोदी सरकार के इस कार्यकाल में धारा 370 को हटाना व जनसंख्या नियंत्रण सबसे प्रमुख विषय होने चाहिए।

रोबी गर्ग, जयपुर

जनसंख्या नियंत्रण कानून, जम्मू कश्मीर में मामला, राम मंदिर मसला और सबसे अहम रिजर्वेशन समाप्त होना चाहिए।

सत्येंद्र शर्मा, शाखा प्रबंधक आईसीआईसीआई बैंक बाड़मेर

मेरी नजर में तो श्री राम मंदिर और कश्मीर मामला सबसे बड़ी प्राथमिकता है।

जितेंद्र पालीवाल, कांकरोली

सरकारी कार्यालयों में छोटे स्तर पर व्याप्त भ्रष्टाचार का सफाया जरूरी है और आम जनता के हित में और जनसंख्या नियंत्रक कानून पूरी कठोरता के साथ लागू हो।

पवन जांगिड़, जयपुर

बहुत सारे विषय है, मगर मेरे विचार में जीएसटी भी बड़ा मुद्दा है। सरकार को इसको व्यवस्थित व व्यापारी की स्थिति देखकर संचालित करना चाहिए।

विजय टांक, राजसमंद

सरकार ने पूर्व में भी कार्य किए हैं एवं उम्मीद है कि इस कार्यकाल में भी बेहतर परिणाम मिलेंगे, परन्तु जब तक जनसंख्या को नियंत्रित नहीं किया जाएगा, तब तक सभी संसाधन पर्याप्त नहीं हो सकते हैं। अत: मेरे विचार में जनसंख्या नियंत्रण कानून आज देश की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

राजेश पुरोहित, राजसमंद

जीएसटी को आसान बनाना और आरक्षण को समाप्त करना इस सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिए।

निखिल कच्छारा, राजसमंद

मेरे विचार से मोदी सरकार को अपने दूसरे कार्यकाल में सबसे पहले देश की न्यायिक व्यवस्था को दुरुस्त करने की आवश्यकता है। क्योंकि ऐसा होने पर न केवल अपराध कम होंगे, अपितु एक बेहतर समाज का निर्माण होगा। इसके साथ शिक्षा को भी रटो और पास हो जाओ, की बजाय सीखने पर केंद्रित करना चाहिए।

शैलेन्द्रसिंह, राजसमंद

आप अपने विचार लिखकर नीचे दिए गए वाट्सएप नम्बर पर डाले। चुनिंदा विचारों को राजसमंद की सबसे लोकप्रिय **पत्रिका जयवर्द्धन** के नवीन कॉलम मंथन में प्रकाशित किया जाएगा।

हेमेंद्र सिंह- 8952905151, विजय शर्मा- 94142-39648

ई मेल : jaivardhanpatrika@gmail.com

अगले अंक के लिए सवाल

बौद्धिक संपदा और एकाधिकार की लड़ाई के बीच हमारा भारत

मनुष्य अपनी बुद्धि से नई-नई खोजें और नई- नई रचना को जन्म देता है और उन विशेष खोजों पर उसका पूरा हक भी है, लेकिन उसके अधिकार का संरक्षण हमेशा से चिंता का विषय रहा है। यहीं से बौद्धिक संपदा और बौद्धिक संपदा अधिकार की बहस शुरू होती है। हम जो भी अपने दिमाग से किसी रचनात्मकता का विकास करते हैं। उसे कोई अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करें, तो यह हमारे अधिकारों का हनन है। जब दुनिया में बौद्धिक अधिकारों की बहस तेज हुई तो संयुक्त राष्ट्र की एजेंसी वीपो का गठन हुआ। आज के दौर में बौद्धिक संपदा का महत्व बहुत बढ़ गया है। यह ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था का आधार है। यह अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में मौजूद है। देश में बौद्धिक संपदा अधिकार के बारे में लोगों में जानकारी बहुत कम है। बौद्धिक संपदा अधिकार निजी अधिकार है। यह अधिकार व्यक्तियों या फिर कंपनियों की रचनात्मकता के संरक्षण के लिए दिया जाता है। बौद्धिक संपदा अधिकारों में औद्योगिक संरचना, पेटेंट, ट्रेडमार्क और कॉपीराइट शामिल हैं। हर वर्ष 26 अप्रैल को विश्व बौद्धिक संपदा दिवस मनाया जाता है। इसका मकसद नवाचारों और आविष्कारों को प्रोत्साहित करने के लिए बौद्धिक संपदा अधिकारों को दुनियाभर में बढ़ावा देना है।

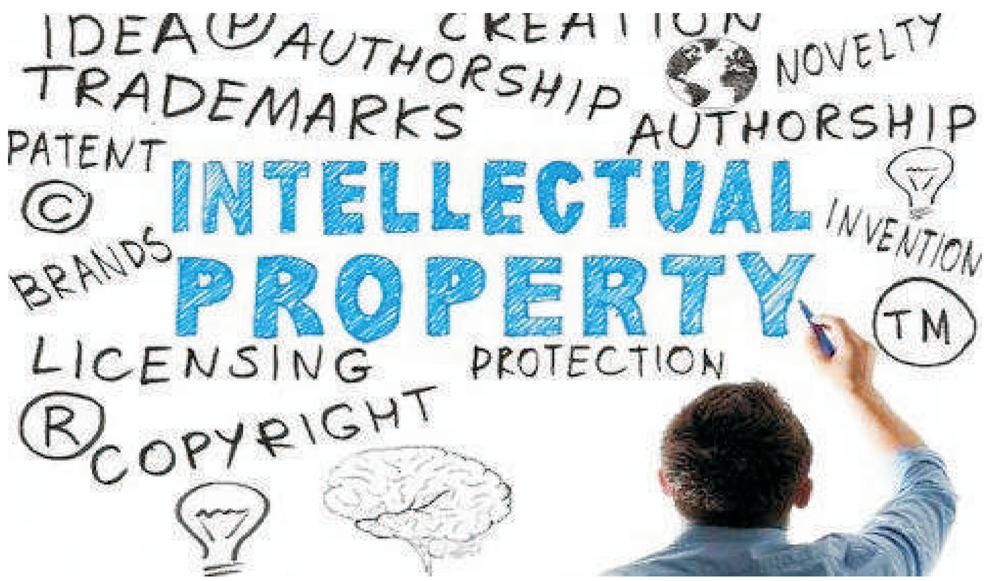

विश्व बौद्धिक संपदा संगठन की ओर से हर वर्ष विश्व बौद्धिक संपदा दिवस मनाया जाता है। हर वर्ष विश्व बौद्धिक संपदा दिवस की अलग अलग थीम होती है। 2019 के लिए थीम थी रिच फोर गोल्ड। बौद्धिक संपदा अधिकार से कॉपीराइट, रचनात्मक कार्यों जैसे पुस्तकें, संगीत, फिल्में, छायाचित्र और सॉफ्टवेयर को संरक्षण मिलता है। औद्योगिक डिजाइन अधिकार, औद्योगिक वस्तु, शैली, डिजाइन के रूप को अतिक्रमण से बचाता है। बौद्धिक संपदा आविष्कार के रचनाकारों का बचाव करती है। बौद्धिक संपदा आर्थिक रूप से मूल्यवान सूचना है। बौद्धिक संपदा अधिकार अन्य व्यक्तियों को सृजित सूचना का प्रयोग करने से रोकने का अधिकार है। साथ ही कुछ शर्तों जिन पर इन्हें प्रयोग किया जा सकता है। उनको तय करने, वैधानिक रूप से लागू करने का अधिकार है। औद्योगिक और आर्थिक विकास सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर बौद्धिक संपदा अधिकारों के संबंध में व्यापक कानून बनाए गए हैं। आज भी इनसे जुड़े अनेक कानूनी पहलू राष्ट्रीय स्तर पर ही हैं और राज्यों को यह अधिकार है कि वह जिस तरह चाहें, इन कानूनों में बदलाव कर सकते हैं, लेकिन ट्रिप्स समझौते के बाद, विश्व बौद्धिक संपदा संगठन के गठन होने से राज्यों की यह क्षमता काफी सीमित हो गई है। विश्व बौद्धिक संपदा संगठन वीपो पूरी दुनिया में बौद्धिक संपदा अधिकारों का संरक्षण करने वाली ऐजेंसी है। वीपो बौद्धिक संपदा के संबंध में संबंधित देशों के साथ होने वाली संधियों को प्रोत्साहन देने के साथ ही, राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली विधि निर्माण को सुनिश्चित करता है। नए- नए आविष्कार और नए- नए ज्ञान के चलते भारत सदियों से पूरी दुनिया में जाना जाता रहा है। अपनी बौद्धिक संपदा के चलते भारत ने हमेशा से दुनियां को रास्ता दिखाया है, लेकिन समय के साथ साथ दुनियां के देशों ने अपनी बौद्धिक संपदा को संरक्षण देते हुए कई तरह के नियम कायदे बनाए हैं। इन्हें देखते हुए भारत ने भी अपनी बौद्धिक संपदा के संरक्षण को मजबूत किया है और आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत के बौद्धिक संपदा माहौल में सकारात्मक सुधार हुआ है। भारत ने भी अपनी एक बौद्धिक अधिकार प्रणाली स्थापित की है, जो विश्व व्यापार संगठन के नियमों के तहत है।

भारत द्वारा अपनी बौद्धिक संपदा को संरक्षण देने से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत के बौद्धिक संपदा माहौल में काफी बदलाव आया है। यूएस चेंबर ऑफ कॉमर्स की ग्लोबल इनोवेशन पॉलिसी सेंटर यानी जीआईपीसी द्वारा वर्ष 2019 में जारी अंतर्राष्ट्रीय बौद्धिक सूचकांक में भारत ने 8वें पायदान की छलांग के साथ 36वां स्थान हासिल किया है।

जीआईपीसी ने यह सूचकांक दुनिया की 50 अर्थव्यवस्थाओं के विश्लेषण के बाद जारी किया है। इससे पहले वर्ष 2018 की सूची में भारत को 44वां स्थान प्राप्त हुआ था। 2019 में जारी हुई सूची में शीर्ष 5 देशों में अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी और स्वीडन शामिल हैं। इस सूची में पाकिस्तान 47 में नंबर पर और वेनेजुएला आखिरी नंबर पर है।

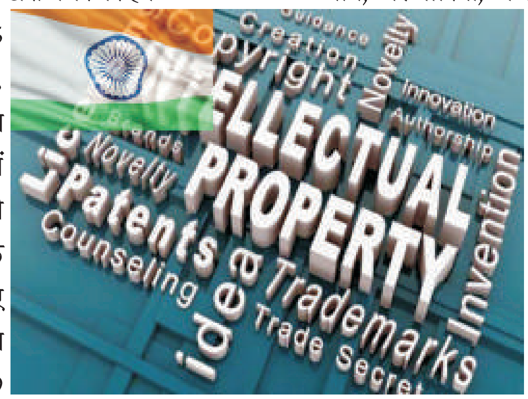

जीआईपीसी द्वारा जारी रैंकिंग 45 मानकों पर निर्धारित की जाती है। इनमें पेटेंट, कॉपीराइट और व्यापार गोपनीयता का संरक्षण शामिल होता है। जीआईपीसी ने अपनी रिपोर्ट में भारत की तारीफ करते हुए कहा कि भारत की स्थिति में सुधार, भारतीय नीति निर्माताओं के जरिए घरेलू और विदेशी निवेशकों के लिए समान रूप से नवोन्वेशी पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने के प्रयास को दर्शाता है। 2019 में जारी सर्वेक्षण में भारत को 3604 फीसदी अंक मिले, जबकि 2018 में ये 3007 फीसदी ही था। रिपोर्ट के मुताबिक सूची में शामिल 50 देशों में भारत की स्थिति में सबसे ज्यादा सुधार हुआ है। बौद्धिक संपदा संरक्षण के तहत पेटेंट की बात करें, तो भारत में 2017 में पेटेंट के मामले में करीब 50 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। वर्ष 2015 में भारत में कुल 6022 पेटेंट प्रदान किए गए। 2016 में 8248 और 2017 में 12287 पेटेंट प्रदान किए गए। वर्ष 2017 में से दिए गए कुल पेटेंट में से 1712 भारतीय संस्थाओं और लोगों को प्रदान किए गए, जबकि 10675 पेटेंट विदेशी संस्थाओं और लोगों को दिए गए।

भारत सरकार ने वर्ष 2016 में राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा अधिकार नीति को मंजूरी प्रदान कर दी थी। इस अधिकार नीति के जरिए भारत में बौद्धिक संपदा के संरक्षण और प्रोत्साहन में काफी मदद मिल रही है। इस अधिकार नीति के तहत सरकार ने यह सुनिश्चित किया है कि वह अनुसंधान एवं विकास संगठनों, शिक्षा संस्थानों, लघु और मध्यम उपक्रमों, स्टार्टअप एवं अन्य हितधारकों को शक्ति संपन्न बनाएगी। ताकि वे नए और रचनात्मक माहौल का वातावरण तैयार कर सकें। इसके साथ ही सरकार ने बौद्धिक संपदा नियमों में कुछ संशोधन भी किए हैं। ये संशोधन बौद्धिक संपदा प्रवर्तन संशोधन अधिनियम 2018 पेटेंट अधिनियम 1970 के सभी संदर्भों को हटा देता है। अब बौद्धिक संपदा से जुड़े अधिकार और कानूनों को लेकर दुनियाभर में जागरूकता आ रही है। अपनी बौद्धिक संपदा को संरक्षित करने के लिए विकसित देशों ने कई बड़े कदम उठाए हैं और ये विकासशील देशों से काफी आगे निकल चुके हैं। आज दुनियां में बौद्धिक संपदा पर एक बड़ी और गंभीर लड़ाई छिड़ गई है, जिसमें भारत समेत कई देश शामिल हो चुके हैं। विकास की नई परिभाषा गढ़ने में हर देश लगातार आविष्कार और अनुसंधान में जुटा है। नई तकनीक के जरिए ना सिर्फ अपनी जरूरतों को पूरा करना, बल्कि दुनिया के बाजार में अपने उत्पादों को बेचकर मुनाफा कमाने की होड़ सी लग गई है। आज अमेरिका और चीन के बीच जारी ट्रेड वार में एक बड़ा मसला बौद्धिक संपदा को लेकर भी है।

दिलचस्प है कि विश्व बौद्धिक संपदा दिवस के दिन ही अमेरिका ने चीन समेत 11 देशों को बौद्धिक संपदा की चोरी और पेटेंट कानून की अवहेलना के आरोप में काली सूची में डाल दिया है। यूएस ने बौद्धिक संपदा चोरी और पेटेंट का पालन न करने के मामले में भारत और चीन, अल्जीरिया, अर्जेंटीना समेत 11 देशों को काली सूची में डाल दिया है। यूएस ने अपनी सालाना रिपोर्ट स्पेशल 301 में कहा है कि यह देश व्यापार कानून में बौद्धिक संपदा और पेटेंट से जुड़े नियमों का उल्लंघन कर रहे हैं। अमेरिका समेत विकसित देशों का विकासशील देशों के प्रति यह रवैया इनकी एकाधिकार नीति को दर्शाता है। अमेरिका द्वारा भारत का काली सूची में डाला जाना द्विपक्षीय व्यापार पर एकाधिकार जमाने का छलावा प्रतीत होता है। बौद्धिक संपदा से जुड़े नियमों और कानूनों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और अधिक स्पष्ट और कड़ाई से लागू करने की दिशा में काम करने की बजाए, अमेरिका जैसे विकसित देश नियमों की आड़ में भारत जैसे विकासशील देशों की व्यापारिक और आर्थिक गतिविधियों को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं।

अब समय आ गया है कि विश्व बौद्धिक संपदा संगठन के सामने भारत अपनी मांगों को रखकर अमेरिका की एकाधिकार वाली पक्षपातपूर्ण नीति का विरोध करें। अमेरिका और चीन के बीच जारी ट्रेड वार की बात करें, तो चीन तकनीक के क्षेत्र में अमेरिका को कड़ी टक्कर दे रहा है। रोबोटिक्स के मामले में विश्व बाजार में चीन ने अपनी धाक जमा ली है। यही वजह है कि बाजार की प्रतिस्पर्द्धा को लेकर अमेरिका– चीन आपस में बौद्धिक संपदा चुराने और कानूनों की अनदेखी करने का आरोप लगाते हैं। वहीं अमेरिका बौद्धिक संपदा और पेटेंट के क्षेत्र में अपना एकाधिकार बनाने में कोई कमी नहीं छोड़ रहा है। अमेरिका के खिलाफ भारत भी बौद्धिक संपदा और पेटेंट को लेकर बड़ी लड़ाई लड़ चुका है। 1997 में यूएस पेटेंट आफिस को हल्दी पर दिया अपना पेटेंट रद्द करना पड़ा। भारत ने दावा किया था कि हल्दी एक भारतीय देसी पौधा है। वहीं 2001 में भी भारत ने अमेरिका के खिलाफ एक निर्णायक लड़ाई लड़ी थी। जब अमेरिका की एक कंपनी ने बासमती चावल पर पेटेंट हासिल कर लिया था। भारत ने अमेरिका पर देसी उपज की चोरी करने का आरोप लगाया, जिसे अमेरिकी कोर्ट ने जायज ठहराया था। बौद्धिक संपदा और पेटेंट में असली प्रतिस्पर्द्धा यूएस और चीन के बीच जारी है, लेकिन अमेरिका दुनिया में अन्य देशों पर भी अपना वर्चस्व जताता है। जाहिर है कि अमेरिका द्वारा बौद्धिक संपदा चोरी और पेटेंट का पालन न करने के मामले में भारत की काली सूची में जाना चिंता का विषय है।

अश्विनी शर्मा
छात्र काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
मो. 9079006588

मैं बीज हूं

मैं बिजी हूं, मां की गोद पाकर पनप ही जाऊंगा
नहीं कुचला गया मुझे लोगों द्वारा, तो मैं वृक्ष बन ही जाऊंगा।

बड़ा होकर मैं, फूल फल और छाया दे ही दूंगा,
नहीं कुचला गया मुझे लोगों द्वारा, तो मैं जीवनदाता बन ही जाऊंगा

पेड़ लगाओ पेड़ लगाओ, अब न गाएंगे यह गान,
उठो लगाओ पेड़ तुम खुद, प्रकृति का कर लो थोड़ा मान।

आओ हम सब मिलकर, इस धरती को स्वर्ग बनाएंगे,
बनी रहे इसकी सुंदरता, हम एक- एक वृक्ष लगाएंगे।

इसकी सुंदरता बिगड़ गई तो, हम अपना अस्तित्व खो देंगे
हम अपना अस्तित्व बचाएंगे, इस धरती को स्वर्ग बनाएंगे।

पुरखों ने जो सौगात हमें दी, हम अपने बच्चों को दे जाएंगे
हम अपना पर्यावरण बचाएंगे, इस धरती को स्वर्ग बनाएंगे।

पेड़ लगाओ पर्यावरण बचाओ, यह संदेश सब तक पहुंचाएंगे।।

वीणा वैष्णव
काव्य गोष्ठी मंच कांकरोली

पेड़ है जीवन का आधार

पेड है जीवन का आधार, मत करो इन पर तुम वार।
सब जीवों का भोजन यार, प्राण वायु का है ये आधार।।
पेड़ है धरती का श्रृंगार, इनमें हैं जीवन का सार।
पेड़ों पर टिका है ये संसार, पेड़ों से ही होती वर्षा यार।।
पेड़ो से सब जीवों में जान, पेड़ लगाओ ये काम महान।
पेड़ से श्यामसुन्दर का नाम, एक पेड़ सो पुत्र समान।।
पेड़ो से ही हम भोजन पाते, पेड़ो से ही सब छायां पाते।
इनके रसीले फल हम खाते, सब पंछी इनपे आश्रय पाते।।
जड़ी बुटियां हमको देते पेड़, बीमारियों से हमें बचाते पेड़।
पेड़ों से सुरक्षित खेत की मेड़, इस जीवन का आधार है पेड़।।

पूरण शर्मा
स्वास्तिक सिनेमा के पास कांकरोली
राजसमन्द 9414977343

चालीस पार की औरतें

चालीस पार की औरतें, संदर्भों से कटी,
अपने होने का अर्थ तलाशती है।
रिश्तो में तोलती है अपना अस्तित्व,
आसपास मौजूद चेहरों में,
अपने नक्श खोजती है।
कभी सोचती है...
उम्र की ढलान पर पकते बालो,
माथे की सलवटो को कैसे संवारू?
दिन-ब-दिन सरकती उम्र
के पीछे छूटे पग चिह्न
मुंह चिढ़ाते, हंसी उड़ाते,
गए दिनों की याद दिलाते है।
अपना ही प्रतिबिंब
अजनबी सा लगता हैं
स्थूल होती काया, झूर्रीदार चेहरा,
एक अनजाना भय बनकर
शिराओं में दौड़ जाता है।
एल्बम में जरी पुरानी तस्वीरें
अपरिचित सी जान पड़ती है।
चुस्त कपड़ों,
खिजाब रंगे बालों से करना चाहती है भरपाई,
वक्त के ख़ामियाजे कि कभी महसूस करती है।
पति की अनुपस्थिति उपस्थिति
की तुलना में घटती ही जाती है,
जवान होते बच्चों की दुनिया
पहुंच से परे मालूम होती है।
बहुत गहरे कहीं कसकती है
टलछत सी बिखरी अपनी मौजूदगी चाहती है।
कोई तो कह दे कि तुम भी खूब जचती हो,
तुम्हारे होने से ही मकान घर हो जाता है,
जब भी छू देती हो तन मन महक जाता है।
कोई तो हो, जो दो पल ठहरकर
बिन पते की चिट्ठी सी
अपनी गुमशुदा पहचान के साए में,
जिए जाती हैं।
चालीस पार की औरतें!

नूपुर बसु
उदयपुर

तीखी मिर्ची

ऑफ द रिकॉर्ड :
जयवर्द्धन के इस कॉलम के लिए आप भी सुझा सकते हैं, आमजन से जुड़ा कोई मुद्दा, लिख भेजिएं-
E-mail : jaivardhanpatrika@gmail.com
वाट्सएप करें - 94142-39648

वो महाराणा प्रताप कठे ?

विजय शर्मा @ राजसमंद
liverajsamand.com

वियतनाम एक छोटा सा देश जिसने अमेरिका जैसे बड़े व बलशाली देश को झुका दिया। लगभग बीस वर्षों तक चले युद्ध में अमेरिका पराजित हुआ। अमेरिका पर विजय के बाद वियतनाम के राष्ट्राध्यक्ष से पत्रकार ने एक सवाल पूछा कि अमेरिका को आपने कैसे झुका दिया? इस पर दिया जवाब सुनकर आप हैरान रह जाएंगें। उन्होंने कहा कि सभी देशों में सबसे शक्तिशाली देश अमेरिका को हराने के लिए मैंने एक महान राजा का चरित्र पढ़ा और उस जीवनी से मिली प्रेरणा व युद्धनीति का प्रयोग कर सरलता से विजय प्राप्त की। आगे पत्रकार ने पूछा कौन थे वो महान राजा तो वियतनाम के राष्ट्राध्यक्ष ने खड़े होकर जवाब दिया मेवाड़ के महाराजा महाराणा प्रताप सिंह। यह नाम लेते समय उनकी आंखों में एक वीरता भरी चमक थी। उन्होंने कहा अगर ऐसे राजा ने हमारे देश में जन्म लिया होता तो हमने सारे विश्व पर राज किया होता।

कुछ वर्षों के बाद राष्ट्राध्यक्ष की मृत्यु हुई। फिर उनकी समाधी पर लिखा गया कि महाराणा प्रताप के एक शिष्य की समाधी। कालांतर में वियतनाम के विदेशमंत्री भारत के दौरे पर थे। पूर्व नियोजित कार्यक्रमानुसार उन्हें पहले लाल किला व बाद में गांधीजी की समाधी दिखाई गई। ये सब देखते हुए उन्होंने पूछा कि महाराणा प्रताप की समाधी कहा है? तब अधिकारी चकित रह गए और वहां उदयपुर का उल्लेख किया। तब विदेश मंत्री उदयपुर आए, जहां महाराणा प्रताप की समाधी के दर्शन किए। समाधी के दर्शन के बाद समाधी के पास की मिट्टी उठाई व अपने बैग में भर ली। इस पर पत्रकार ने मिट्टी रखने का कारण पूछा तो मंत्री ने कहा ये मिट्टी शूरवीरों की है। इस मिट्टी में एक महान् राजा ने जन्म लिया। ये मिट्टी मैं अपने देश की मिट्टी में मिला दूंगा, ताकि मेरे देश में भी ऐसे ही वीर पैदा हो।

मगर जिन महाराणा प्रताप की राष्ट्रभक्ति से विदेशी शासक भी प्रेरणा लेकर बड़ी से बड़ी जीत हासिल करते हैं, उन्हीं की जन्म स्थली व कर्म स्थली राजसमन्द जिला मुख्यालय में महाराणा प्रताप की स्मृति में कोई बड़ा स्मारक तक नहीं है। दिल्ली के मुख्य बस स्टेंड का नाम महाराणा प्रताप बस अड्डा हैं, मगर राजसमन्द के किसी चौराहे पर भी प्रताप को नहीं याद किया जाता है। समस्त विश्व में अपनी देश भक्ति के आदर्श रहे महाराणा प्रताप की यह राजसमन्द में घोर उपेक्षा है। कहते हैं शिवाजी के बचपन में उनकी माता जीजाबाई उन्हें महाराणा प्रताप की कहानियां सुनाया करती थी, मगर खुद महाराणा की जन्म स्थली में जिम्मेदार भूला बैठे हैं।

मेवाड़ की आन, बान, शान के लिए राजकीय सुविधाएं त्याग कर जंगल के अभावग्रस्त जीवन में घास की रोटियां खाने वाले महाराणा प्रताप की कहानी संपूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है, मगर उनकी जन्म स्थली और कर्मस्थली को ढूढ़ते हुए अगर कोई पर्यटक राजसमंद पहुंच जाए, तो उसे महाराणा प्रताप के नाम का कोई संग्रहालय तो क्या स्मारक तक नहीं मिलता है। ऐतिहासिक युद्ध स्थल हल्दीघाटी और दिवेर में करोड़ों की लागत से निर्मित स्मारक भी उपेक्षा के शिकार है। कई जगह पर ताले जड़े हुए हैं, तो कहीं सुविधा के अभाव में पर्यटक पहुंच ही नहीं पा रहे हैं। हल्दीघाटी के विकास के लिए राजसमंद के जनप्रतिनिधि ही नहीं, देश की राजनीति से जुड़े नेताओं ने भी आश्वासन दिए। कुछ योजनाओं में पैसा आया, मगर बजट की खानापूर्ति भर ही कार्य हो पाए। योजनाओं को मूर्त देने में सरकारों की उदासीनता और अफसरों की उपेक्षापूर्ण रवैया बना रहा। ऐसे में महाराणा प्रताप जयंती भी महज औपचारिकता भर रह गई है।

जब भी पर्यटक राजसमंद जिला मुख्यालय पर महाराणा प्रताप से जुड़े स्मारक के बारे में पूछता है, तो कुंभलगढ़ के कवि माधव दरक की वो पंक्तियां याद आती है कि वो महाराणा प्रताप कठे... ? क्योंकि महाराणा प्रताप की प्रासंगिकता अब देशभक्ति गीतों और किताबों तक ही सीमित रह गई है।

अधूरी प्रेम कहानी

करीब दस साल बाद उसको देख एक बार तो पहचान नहीं सका। सोचता रहा कि ये वही हंसमुख अजीत है, जो कॉलेज में खुद भी हंसता और दूसरो को भी हंसाता। दिमाग पर मुझे ज्यादा जोर नहीं देना पड़ा, वो मेरे करीब आया, तो मैं उसे पहचानने लग गया, तब तक उसने मेरे पास आकर पैर छुए।

गुरुजी मैं अजीत आपका छात्र आपने शायद नहीं पहचाना।

पहचानोंगे भी कैसे ? उसके गंभीर स्वभाव को मैं समझ नहीं सका।

हम कुछ देर के लिए पास ही एक बगीचे में बैठ गए। उसने जो अपना नाम बताया, उसके बाद मेरे रोंगटे खड़े हो गए।

आइए मैं आपको घर छोड़ देता हूं। घर आ, अपने कमरे में किसी को न आने का कहकर चला गया, आराम करने। पर दिल बेचैन हो तो कैसे आराम हो सकता है। अतीत मुझे अपने संग पुरानी यादों में ले आया। अच्छे से याद है, मुझे वो मेरा पहला कॉलेज का दिन जब मैंने नई नई नौकरी ज्वाइन की। अजीत ही था, जिसने प्रिंसीपल साहब के कमरे तक मुझे छोड़ा। उसने मेरे लिए घर देखा, मुझे इस शहर से परिचित करवाया। आज जो भी उसने अपने बारे में बताया, वो रह रह कर याद आ रहा था।

उसने बताया... मेरे मिलनसार स्वभाव से ही तो अंजना आकर्षित हुई थी। हमारी पहली मुलाकात कॉलेज के एक प्रोग्राम में हुई। जब कुछ लड़के उसको और उसकी सहेलियों को परेशान कर रहे थे, उनको जगह नहीं दे रहे। तब मैंने उनकी मदद करी।

उस दिन के बाद हम जब भी आमने सामने होते तो देख मुस्कराते। धीरे धीरे ये मुस्कुराहट बात में बदली। बातें मुलाकात में और मुलाकात प्यार में। हमको प्यार कब हुआ, हमको भी नहीं मालूम। घंटो साथ बिताते, वो समय आ गया था कि बिना कहे हम एक दूसरे को पढ़ लेते। दोनों ने अपना कॅरियर भी एक ही चुना।

हमारे प्यार के लिए कुछ ओर लिखा था भगवान ने...

एक दिन अचानक अंजना ने कहा– तुम मुझे कितना प्यार करते हो ? उसके अचानक से किए इस सवाल का जवाब वो अच्छे से जानती थी, मुझे परेशान कर गया। फिर भी जवाब दिया– इस जहां में सबसे ज्यादा, तुम्हारी खुशी के लिए कुछ भी कर सकता हूं।

अजीत शायद हमारा प्यार सच्चा नहीं कुछ कमी है इसमें। कल मां से मैंने बात की, तुम्हारी मेरी शादी की तो वो मुकर गई। तुम करो अपने माता पिता से बात की, वो हमारी शादी की बात मेरे माता पिता से करें।

अंजना! आज मैं भी तुमसे यही बात कहने वाला था कि मेरी मां ने भी इस रिश्ते को मना कर दिया।

चलो, हम भाग कर शादी करते है ? जब सब ठीक हो जाएगा हम आ जाएंगे ? नहीं अजीत, नहीं हमने भाग कर शादी की, तो खुशी हम दोनों को मिलेगी, लेकिन गम दोनों के परिवारों को।

इसके गम पर क्या हम अपनी खुशी मना पाएंगे ?

नहीं, कभी नहीं...।

बोल सही रही हो और तुम्हारे अलावा किसी ओर से शादी का मैं नहीं सोच सकता ?

मुझे तो करनी होगी, अपने माता पिता के लिए, उनकी खुशी के लिए, नहीं तो वो मर जाएंगे।

कुछ देर की खामोशी के बाद...।

ठीक अंजना तुम अपना फर्ज निभाओ। मैं अपने प्यार के साथ जिंदगी बिताऊंगा ? आज ये आखरी मुलाकात है।

अजीत तेजी से वहां से निकल लेता है।

अंजना मजबूरी में शादी करती है, सिर्फ माता पिता की खुशी के लिए। भगवान का खेल न्यारा, उसकी शादी के दो साल बाद ही उसका पति गंभीर बीमारी से चल बसा। रह गई अंजना अकेली। वो अपने माता पिता के पास आ गई और कमाने लग गई। बदकिस्मती से दोनों को सब मालूम है। दोनों नहीं मिले पहले की तरह...। एक विधवा बन जी रही, एक अपने प्यार के साथ...।

उनकी इस हालत को जान मुझे बेचैनी हो गई । दो मासूम बच्चे हालात का शिकार, मैं उनका गुरु फिर भी असहाय।

सोचते हुए आंखों में चमक आई और चल दिया दोनों से मिलने उनके घर।

सारिका औदिच्य
लेखक जयपुर

मासिक "जयवर्द्धन" पत्रिका के ग्राहक बनें और आकर्षक डिस्काउंट पाएं

नाम- श्री/श्रीमती...

पता .... राज्य ....

फोन (निवास) ....मोबाइल ....ई-मेल ....

कृपया **जयवर्द्धन** के नाम से रु ....का डी.डी या चैक नं. ....

तिथि .... प्राप्त करें।

बैंक का नाम ....

(राजसमंद जिले से बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू अधिक भेजें।)

अवधि	अंकों की संख्या	कवर मूल्य	बचत	सब्सक्रिप्शन दर
3 वर्ष	36	720	220	200 रुपए

कृपया इस फार्म को भरकर डी.डी. या चैक के साथ हमें इस पते पर भेजें,

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,

जिला-राजसमंद (राजस्थान) मोबाईल 9414239648, 9950084705

जयवर्द्धन
3 वर्ष की बुकिंग से
220 रुपए की महाबचत

नियम और शर्तें :

1. यह योजना केवल भारत में ही मान्य है।
2. विशेष पेशकश सीमित अवधि के लिए है।
3. राजसमन्द जिले के बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू. अधिक भेजें।
4. पत्रिका साधारण डाक द्वारा भेजी जाएगी तथा डाक गुम हो जाने पर जिम्मेदारी संस्थान की नहीं होगी। सूचना प्राप्त होने पर यदि अंक उपलब्ध रहता है तो पुन: निशुल्क प्रेषित कर दिया जाएगा।
5. पहले अंक को आप तक पहुंचने में एकाध सप्ताह लग सकता है।
6. कूरियर रजि.डाक से मंगवाने के लिए ग्राहक को कूरियर रजि. डाक खर्च अतिरिक्त वहन करना होगा।
7. सभी विवादों का न्याय क्षेत्र राजसमन्द न्यायालय के अधीन होगा।

माइक की जुबानी

आर्यावर्त के जंबूद्वीप में जो भारतखंड है, उसमें 17वीं लोकसभा की चुनावी सरगर्मी समाप्त हो चुकी है। जनता के भावों में उबाल आना थोड़ा सा कम हुआ है। चुनाव की ऐसी तासीर होती है कि हर आदमी ज्योतिषी, गणितज्ञ, इतिहासकार हो जाता है और बात बात में अपनी राय देना जन्मसिद्ध अधिकार मान लेता है। अपनी विचारधारा दूसरों को मनवाने के लिए इस तरह से उतारू हो जाएगा कि पूछिए मत। ट्रैक से हटकर तर्कहीन बहस मनोरंजन का साधन बन जाती हैं। कुछ पर तो चुनाव इस कदर चढ़कर बोलने लगता है कि मरने- मारने पर उतर आते हैं।

आप लोग सोच रहे होंगे कि यह बकर- बकर करने वाला कौन है? भला जो चुनाव जैसे कीमती मुद्दे पर बोल रहा है। नेताओं के भाषणों से लंबा खींचने के बजाए आपको को एक वाक्य में बताऊं तो मैं माइक हूं और मेरी पहुंच संसद से सड़क तक है या यूं कहिए मेरे बिना कोई भी चुनाव नहीं हो सकता है। जी हां मेरे कारण ही नेताओं के शब्द आप तक पहुंच पाते हैं, यानी मैं एक माध्यम हूं जनता और अधिनायकों के मध्य का। मैं अपने अंदर कुछ भी नहीं रखता हूं। इधर से लिया और उधर दिया। अगर रखने लगा तो पागल हो जाऊंगा। क्योंकि नेताओं की बेसिर पैर वाली बातें डाइजेस्ट करना कोई आसान काम नहीं है। अगर मैं नहीं होता तो इन नेताओं की औकात नहीं थी कि इतना चीख लें। मेरी कई पीढ़ियां इसी कार्य में अपनी जिंदगी गंवा चुकी हैं। हमारे पूर्वज बहुत बड़े बड़े होते थे। क्योंकि तब नेताओं के वादे छोटे होते थे, लेकिन जैसे जैसे नेताओं के वादे बड़े होने लगे, हम लोग अपना आकार छोटा करने लगे।

वैसे तो मैं कई चुनाव में सहभागिता कर चुका हूं, लेकिन इस बार के चुनाव में जो मजा मिला, वह कभी नहीं मिला। इस बार चुनाव और देवी जगराता में कोई अंतर नहीं रहा। जैसे नवरात्रि में देवी पांडालों में जय जयघोष करवाया जाता है कि प्रेम से बोलो- जय माता दी, सब मिल बोलो- जय माता दी, आगे वालो- जय माता दी, पीछे वालो- जय माता दी, आवाज न आई- जय माता दी, बच्चे बोलो- जय माता दी, बूढ़े बोलो- जय माता दी...। वैसे ही चुनावी सभा में नारे बुलंद किए गए। एक कहता सब मिल बोलो मैं भी चौकीदार हूं, तो दूसरी तरफ सभा की शुरुआत में नारे लगवाए जाते चौकीदार चोर है। अबकी बार के चुनाव एक दृष्टि से और भी ऐतिहासिक रहे हैं। क्योंकि इससे पहले भारत ही नहीं, विश्व के किसी भी देश के चुनावी इतिहास को उठाकर देख लीजिए, किसी भी प्रधानमंत्री ने स्वयं को सूचीबद्ध गालियां नहीं दी थी। इस दृष्टि से यह चुनाव अविस्मरणीय है। राफेली राग सुन सुनकर तो मेरे कान पक गए थे, लगता था मुंह में घुस जाऊं, लेकिन मजबूरी थी कि स्टैंड ने कसकर पकड़ रखा था।

अभद्रता की जितनी वैरायटियां हैं, सबका स्वाद इस बार चखने को मिला। भावुकता की चादर में लपेटकर जो भी फेंकने के लिए दिया गया, मैं फेंकता चला गया। मरता क्या न करता, मेरे पास न तो सूप था कि सार सार को गह लेता और न ही छन्ना था कि कंकड़ों को अलग कर देता।

भारत के राजनीतिक इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है, जब बिना मुद्दों के चुनाव लड़े जा रहे हों। शिक्षा, रोजगार, महंगाई, पर्यावरण संरक्षण जैसे मुद्दे मुंह ताकते रह गए कि हमारी बारी कब आएगी, लेकिन इन सबकी जरूरत ही नहीं पड़ी। अबकी बार नेता अभिनेता और अभिनेता नेता बन गए, जिसके कारण पता ही नहीं चल पा रहा था कि रियल इलेक्शन हैं या फिल्मी हैं।

मैं तो तंग आ चुका था, इतनी लंबी चुनावी प्रक्रिया से और एक ही प्रकार की जनता को देखते- देखते तथा एक ही प्रकार के ऊलजलूल भाषणों को सुनते सुनते। भगवान से प्रार्थना कर रहा था कि है ईश्वर! इस नारकीय घटना से मुक्ति दिलाओं। भगवान ने सुन ली हृदय से लाख लाख धन्यवाद और ईश्वर से प्रार्थना है कि अब मुझे ऐसी दुर्गति में मत डालना।

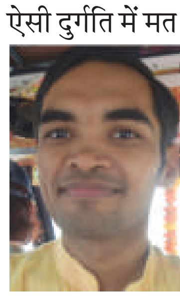

पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू'
सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग
जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय
चित्रकूट (उत्तरप्रदेश) 86041-12963

पर्यावरण की अनदेखी घातक

भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में वर्तमान में जो सबसे ज्वलंत मुद्दा है, तो वह है पर्यावरण संरक्षण। यह कोई गर्व का विषय नहीं है कि वर्तमान समय में हम पर्यावरण को संरक्षित करने हेतु संगठनों का निर्माण, विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन आदि कार्य कर रहे हैं। ये संगठनों के निर्माण व कार्यक्रम हमारी नाकामी का परिचय है।

हम पर्यावरण के प्रति हमारे कर्तव्यों को दिन-ब-दिन नज़रअंदाज करते जा रहे हैं, जिसका फल हमें आंधी, तूफान व बेमौसम बरसात के रूप में मिल रहा है। इस विषय पर हमें गहनता से सोच- विचार करना होगा व हमें हमारे गैर जिम्मेदाराना स्वभाव को खत्म करना होगा। पर्यावरण के लिए हमारी स्वामी भक्ति सिर्फ दो अवसरों तक सिमट कर रह जाती है। जैव विविधता दिवस और विश्व पर्यावरण दिवस। इन दो विशेष अवसरों को मनाने के बाद हमारे कर्त्तव्य, आदर्श व नैतिकता सुप्त पड़ जाती है और अगले वर्ष में फिर से इन्हीं अवसरों के आगमन पर जागृत अवस्था में आ जाती है। इसका सीधा सा अर्थ तो यही हुआ कि पर्यावरण को नुकसान पहुंचाओ और पर्यावरण दिवस आने पर कुछ पौधे लगाकर पर्यावरण के विषय पर ज्ञान की गंगा को अविरल बहाओ।

हमें अपने इस नज़रिये को बदलना होगा और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में पहला और मजबूत कदम हमारी अगली पीढ़ी को बाल्यावस्था से ही इसके बारे में प्रेरित करके बढ़ाना होगा। धीरे- धीरे नहीं, बल्कि द्रुत गति से धरा का ये सुनहरा शृंगार विलुप्त होता जा रहा है। हमें इस ओर भी हमारा ध्यान आकर्षित करना होगा और औरों का भी ध्यान आकर्षित करवाना होगा।

पर्यावरण और इतिहास

हमारे देश में पर्यावरण का भी गौरवमयी इतिहास रहा है। भारत के उत्तर- पश्चिम में स्थित राज्य राजस्थान में जोधपुर के खेजड़ली गांव में खेजड़ी के पेड़ों की रक्षा के लिए विश्नोई जाति के सैकड़ों लोगों की कुर्बानी की गाथा इसका ज्वलंत उदाहरण है। खेजड़ली के बलिदान की गाथा रोमांचक और प्रेरणास्पद है। जोधपुर किले के निर्माण में काम आने वाली लकड़ियों की आपूर्ति के लिए वहां खेजड़ी के वृक्षों की कटाई का निर्णय लिया गया। इस पर खेजड़ली गांव के लोगों ने अपनी जान की कीमत पर भी वन की रक्षा करने का निश्चय किया। चौरासी गांवों को इस फैसले की सूचना दे दी गई।

सैकड़ों की तादाद में लोग खेजड़ली गांव में इकट्ठे हो गए और पेड़ों को काटने से रोकने के लिए उनसे चिपक गए, लेकिन शासन ने इसकी परवाह नहीं की और जब बर्बरतापूर्वक पेड़ों को काटा जाने लगा। उन पर चिपके हुए लोगों के शरीर के टुकड़े- टुकड़े

होकर गिरने लगे। एक व्यक्ति के कटने पर तुरंत दूसरा व्यक्ति उसी पेड़ से चिपक जाता। इस बलिदान में अमृतादेवी और उनकी दो पुत्रियां हरावल में रहीं। पुरुषों में सर्वप्रथम अणदोजी ने बलिदान दिया था और बाद में विरतो बणियाल, चावोजी, ऊदोजी, कान्होजी, किसनोजी, दयाराम आदि पुरुषों और दामी, चामी आदि स्त्रियों ने अपने प्राण दिए। कुल मिलाकर 363 महिला-पुरुषों ने अपनी जान दे दी। जब इस घटना की सूचना जोधपुर के महाराजा को मिली, तब जाकर उन्होंने पेड़ों की कटाई रुकवाई और भविष्य में वहां पेड़ न काटने के आदेश दिए। खेजड़ली के इन वीरों की स्मृति में यहां हर वर्ष भादवा सुदी दशमी को मेला लगता है, जिसमें हजारों की संख्या में लोग इकट्ठे होते हैं। अब इस गौरवमयी इतिहास को जिंदा रखने के लिए हमें संकल्पबद्ध होना होगा।

हमें इस तरह की घटनाओं से प्रेरणा लेनी चाहिए और हमारी आने वाली पीढ़ी को भी इन घटनाओं से प्रेरित करना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र संघ इस क्षेत्र में कई कार्यक्रमों के द्वारा सम्पूर्ण विश्व में पर्यावरण संरक्षण और ओजोन की सुरक्षा के लिए प्रयासरत है। अत्यंत गर्व का विषय है कि विश्व पटल पर स्वच्छ व शुद्ध पर्यावरण के विषय में प्रयास करने में हिंदुस्तान शुरू से ही अग्रणी रहा है और इसी दिशा में हिंदुस्तान को **चैम्पियन ऑफ दी अर्थ** पुरस्कार से नवाजा गया है। अब सभी भारतवासियों का यह कर्त्तव्य बनता है कि हम पर्यावरण को संरक्षित कर इस पुरस्कार की गरिमा को बनाए रखें।

विजय पालीवाल
काव्य गोष्ठी मंच राजसमंद

एक संघर्षशील व्यक्तित्व गणेशलालजी सरुपरिया

कांकरोली के श्री बालकृष्ण विद्यालय के पास स्थित बालकृष्ण स्टेडियम आज एकमात्र सार्वजनिक कार्यों के लिए एक प्रमुख स्थान बन गया है। 15 अगस्त हो या 26 जनवरी का कार्यक्रम, गणगौर महोत्सव हो या रावण दहन के साथ-साथ खेलकूद, सभी यहां आयोजित किए जाते हैं। पर आज से लगभग 55-60 वर्ष पूर्व ये जगह श्री गणेशलालजी सरूपरिया का 9-10 बीघा का एक खेत हुआ करता था, जिसमें गन्ने की फसल पैदा हुआ करती थी। स्कूल के पास होने के कारण अक्सर बच्चे इसका आनन्द लिया करते थे। अचानक एक दिन लेंड एक्वीजेशन एक्ट के तहत इस खेत को बालकों के खेलकूद के लिए स्कूल को हस्तान्तरित कर दिया गया । तब से ये विस्तार कर स्टेडियम का रूप ले अपनी सेवाएं दे रहा है।

श्री गणेशलालजी सरूपरिया का जन्म 4 नवम्बर 1904 को मन्दिर मार्ग कांकरोली स्थित उस केलूपोश मकान में जहां आज विशाल भवन बन गया है। श्री कजोड़ीलालजी सरूपरिया के एक साधारण से परिवार में जन्म हुआ था। अभावों से जुझते इस परिवार में एक और बड़ा झटका तब लगा, जब श्री सरूपरिया 3 वर्ष के थे और उनके पिता का अचानक देहावसान हो गया। जैसे-जैसे अपना जीवनयापन करते हुए वे कुछ संभल ही पाए थे कि 9 वर्ष की उम्र में उनकी मां भी उन्हें छोड़कर देवलोक गमन कर गई। इस 9 वर्ष की आयु में उन पर बहुत ही बड़ी जिम्मेदारी आ पड़ी। वे हिम्मत हारने वालों में नहीं थे। उन्होंने इतनी कम उम्र में ही राजनगर निवासी श्री अम्बालालजी मादरेचा जो उस वक्त के अच्छे खाते- पीते धनाढ्य व्यवसायी थे, के यहां नौकरी करना प्रारम्भ कर दिया। नौकरी भी क्या थी, अम्बालालजी मादरेचा के ऊंटों को चराना, उनकी देखभाल करना और आस-पास के पहाड़ी गावों से मादरेचा साहब के व्यावसायिक माल को लाना व ले जाना आदि कार्य करने लगे। तीन वर्ष के कठोर परिश्रम के बाद उस वक्त श्री द्वारकाधीश मन्दिर में श्री हीरालालजी पगारिया अधिकारी पद पर थे, जब उन्होंने गणेशलालजी सरूपरिया की मेहनत और लगन को देखा, तो उन्होंने स्नेहवश गणेशलालजी सरूपरिया के लिए मालनिया चौक कांकरोली में एक छोटी सी परचूनी दुकान लगवा दी। वे उसे चलाने लगे, पर वे इसे सही सही नहीं चला पाए, तो फिर हीरालालजी ने उन्हें उस वक्त के अपने मन्दिर के परसादिया श्री परसरामजी पालीवाल के यहां काम पर लगा दिया। बस वहीं से ये किस्मत के धनी बनने लग गए।

श्री परसरामजी पालीवाल के यहां भी उन्होंने पूरी निष्ठा व ईमानदारी से 48 वर्ष तक काम किया। परसाद बेचना, खेती संभालना, रचका बेचना आदि न जाने कितने काम वे करते रहे। उनकी ईमानदारी और निष्ठा से प्रभावित हो परसरामजी उन्हें अपने छोटे भाई की तरह रखते थे। उन्होंने ही श्री गणेशलालजी सरूपरिया की शादी बोरज गांव की शशिबाई से कराई। परसरामजी का सारा कारोबार संभालने में लगे रहे। जब श्री परसरामजी के पूरे दिन हुए, तब भी उनके घर की देखभाल बच्चों की परवरिश और उनका ध्यान, उनकी निष्ठा का प्रतीक था। जब परसरामजी के तीनों ही बच्चे बड़े हो गए, तो आपने अपने हाथों से इन तीनों के हिस्से पूंजी बांट दी और तब से आपने अपना स्वतंत्र व्यापार प्रारंभ किया।

अब तक के किए गए अच्छे कामों का ही पुण्य था कि आपको ईश्वर ने बहुत कुछ दिया, कई मकान, खेतीबाड़ी, धन, वैभव सब कुछ। उस समय एक समय ऐसा भी आया, जब लोग आपको नगर सेठ कहकर पुकारा करते थे, पर आखिर सबकुछ होने के बाद भी 30 अप्रेल 1988 को ईश्वर का बुलावा आया और आप सबको छोड़-छाड़कर परमात्मा में लीन हो गए और अपनी यादें छोड़ गए।

एक आदर्श पुरूष परसरामजी परसादिया

श्री द्वारकाधीश प्रभु की पावन नगरी कांकरोली के करीब ही जावद गांव के पालीवाल समाज के ब्राम्हण परिवार के श्री रतनाजी पालीवाल के एक मध्यम वर्गीय परिवार में जन्म लिया। आपका बचपन हंसते खेलते किशोरावस्था में प्रवेश कर गया। अपने चार भाईयों में श्री परसरामजी सबसे बड़े थे। इसलिए जिम्मेदारियां भी आप पर ही थी। जब कुछ बड़े हुए तो द्वारकाधीश मन्दिर में नौकरी करने लग गए और जल्दी ही आपने अपने अथक परिश्रम के बल पर आपने भंडारी के पद पर कार्य संभाल लिया और पूरी निष्ठा के साथ आप काम में जुट गए। इसी दौरान आपने मन्दिर मार्ग पर परसाद की दुकान लगाई और परसरामजी परसादिया के नाम से पहचाने जाने लगे। आपका काम चल निकला और आपने धोरा मोहल्ला स्थित पीपली चबुतरा के पास एक आलीशान भवन का निर्माण करा उसमें रहने लगे। धीरे-धीरे जमीन-जायदाद का दायरा बढ़ने लगा, खेतीबाड़ी, गोपालन आपका शोक था। प्रभु की अपार कृपा से धन, वैभव आपके कदम चुमने लगे। इन सभी कामों को संभालने हेतु जिम्मेदार लोगों की जरूरत महसूस होने लगी और उसका समाधान उस समय के मन्दिर अधिकारी श्री हीरालालजी पगारिया ने श्री गणेशलालजी सरूपरिया को आपके यहां नौकरी पर लगा दिया। लगभग 48 वर्षों तक श्री सरूपरिया पूरी निष्ठा और ईमानदारी से इस काम को अंजाम देते रहे।

बढ़ती उम्र के साथ साथ परसरामजी ने समाजसेवा की ओर भी बहुत कुछ किया। नारी शिक्षा की ओर कांकरोली गांव में पहली अलख जगाने का काम भी आप ही के नाम जाता है। आपने पीपली चबूतरा स्थित अपने मकान के एक भाग में पहला कन्या विद्यालय खोलने का एक क्रांतिकारी कदम उठाया। कांग्रेसी नेता डॉ. गिरिजा व्यास की माता श्रीमती जमना बाई को उस स्कूल की सारी जिम्मेदारी और प्रधानाध्यापिका बनाकर स्कूल का सुचारू रूप से संचालन प्रारंभ किया। साथ ही आपने अपने भाईयों को भी पूर्ण सहयोग देकर समाज में उनका मान सम्मान बढ़ाया। आपने समाज के बारे में भी बढ़-चढ़ कर सोचने लगे, समाज के कार्य हेतु उन्होंने पीपली चबूतरा के पास रेहरों का थाला नामक स्थान खरीद कर समाज को शादी-ब्याह व अन्य कार्यों के लिए नोहरे के रूप में भेंट किया और समाज में अपना एक उच्च स्थान बनाया और समाजसेवा में जुट गए। आपने जलचक्की रोड़ पर एक बड़ा भूखंड खरीद पालीवाल मंडल का निर्माण कराया, जिसमें स्कूल चलाने के साथ-साथ वे प्रतिवर्ष समाज के बालकों का यज्ञोपवित भी कराया करते थे। आज हम जहां पालीवाल मार्केट के रूप में जो विशाल ईमारत देख रहे हैं, ये उन्हीं के द्वारा समाज को प्रदान की गई। पालीवाल मंडल की ही जगह है। उनकी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए उनके सबसे छोटे पुत्र श्री हरगोविन्द पालीवाल ने अपने नवयुवक साथियों के सहयोग से इस पालीवाल मार्केट के रूप को निखारा। रामधुन गली में जो सत्यनारायण का मन्दिर है, उसे भी प्रारम्भिक अवस्था में सजाने संवारने का काम श्री परसरामजी ने किया। नगर बीचों बीच स्थित गांधी पार्क के कमरों का निर्माण भी आपने करवाया।

गैर नृत्य के आप अच्छे कलाकर थे। बहुत ही तन्मयता के साथ गैर नृत्य करते और लोगों को मंत्रमुग्ध कर देते। इतना सब कुछ होने के बाद और समाज में इतनी इज्जत और मान सम्मान पाने पर भी आपका जीवन सादा, सरल और इंसानियतभरा रहा। लोग आज भी आपको बड़े आदर से याद करते हैं। मैं छोटा था, तब बालकृष्ण विद्यालय में पढ़ा करता था। एक दिन मैंने देखा स्कूल के पास वाला पूरा खेल का मैदान लोगों से खचाखच भरा हुआ है। असंख्य स्त्री-पुरूष आ जा रहे हैं। भोजन परोसा जा रहा है। सुना आज परसरामजी परसादिया के पूरे दिन हो गए हैं। चौबीस खेड़े के समस्त समाजजन आपको श्रद्धांजलि देने बड़ी दूर दूर से आए हैं। मेरे जेहन में आज भी वो दृश्य ताजा है। ऐसे मेरे गांव के महापुरूष को भावभीनी श्रद्धांजलि।

अफजल खां अफजल
जलचक्की, कांकरोली

एकता में शक्ति, हर असंभव कार्य भी संभव

राजसमंद. विश्व हिन्दू परिषद के सामाजिक समरसता अभियान के तहत कांकरोली स्थित श्री द्वारकाधीश मंदिर के पास लाल बंगला पर भगवान परशुराम का जन्मोत्सव नगर अध्यक्ष ओम पुरोहित की अध्यक्षता में श्रद्धा से मनाया। पुरोहित ने कहा कि परशुराम जैसे तप व बल के सामर्थ्य से ही दुनिया चल सकती है। उन्होंने तप बल के सामर्थ्य से अपने फरसे से देश समाज की दिशा बदली। आज चारों तरफ हिन्दू संस्कृति पर आक्रमण हो रहा है, चाहे व्यक्तिगत हो या किसी बैनर तले। ऐसी स्थिति में हिन्दू समाज को एकजुट होकर इसका मुकाबला करना होगा। भील समाज राजस्थान सभापति गंगाराम भील ने हिन्दू समाज को बुराइयों से मुक्त करने की जरूरत बताई। कुमावत समाज अध्यक्ष सुंदरलाल कुमावत ने हर जाति, समुदाय के लोगों को एकजुट होने का आह्वान किया। वैष्णव समाज अध्यक्ष प्रहलाद वैष्णव ने हिन्दू समाज की बढ़ती विखंडता पर चिंता जताई। वाल्मीकि समाज के मनीष छापरवाल, युवा ब्रह्मशक्ति मेवाड़ राष्ट्रीय अध्यक्ष योगेश पुरोहित, सनाढ्य समाज के गोविंद सनाढ्य, सिंधी समाज के श्याम चंदानी ने कहा कहा संस्कारों की कमी से धर्म संस्कृति से धीर धीरे विमुख होने से जातीय भेदभाव बढ़ रहे हैं। इसलिए युवा पीढ़ी को एकजुट करने की सख्त जरूरत है।

विहिप जिला सामाजिक समरसता प्रमुख भगवती लाल पालीवाल ने कहा कि अब सभी समाजों के महापुरुषों के जन्मोत्सव सभी सहभागी बनकर समाज की एकता का परिचय देते हुए मिलकर मनाए, ताकि समरसता का वातावरण बनेगा। इस दौरान रमेश सिंह चारण, राकेश बड़ाला, अनिल खंडेलवाल, प्रकाश जोशी, चंद्रशेखर गोरवा, जीवनसिंह चारण, लोकेश श्रीमाली, अनिल व्यास, नृसिंह सनाढय, सत्यप्रकाश जांगिड़, जितेंद्र गायरी, तरुण साहू, देवेंद्र कुमावत, भवानी जोशी, तरुण सोनी आदि थे।

प्यारी-जसवंत को इंडियन आइकॉन अवार्ड

राजसमंद. मंडावर को विशेष पहचान दिलाने के लिए प्रयासरत सोशल एक्टिविस्ट चर्चित मंडावर सरपंच प्यारीदेवी व उनके पति जसवंतसिंह रावत को जयपुर में आयोजित यूथ वर्ड समारोह में यूथ वर्ड इंडियन आइकॉन अवार्ड से सम्मानित किया गया। ज्ञातव्य है कि समग्र विकास के प्रयास, शराबबंदी, शैक्षिक उन्नति के लिए सरपंच के वेतन से अध्यापक लगाना, घर-घर निम्बू अभियान, महिला सशक्तिकरण, युवा जागृति के लिए यूथ वर्ड इंडियन आइकॉन अवार्ड से सम्मानित किया गया। इसी तरह देश की 11 यूथ आइकॉन को सम्मानित किया गया।

अंतरराष्ट्रीय युवा सम्मेलन में शामिल होंगे राजसमंद के नीलेश पालीवाल

राजसमंद. सेठ रंगलाल कोठारी राजकीय महाविद्यालय राजसमंद में राष्ट्रीय सेवा योजना की छात्र इकाई के स्वयंसेवक नीलेश पालीवाल का 25 से 28 अगस्त 2019 को पुत्रजाया (मलेशिया) में आयोजित होने वाले एशिया यूथ इंटरनेशनल मॉडल यूनाइटेड नेशंस के लिए चयन हुआ है। इस मंच पर संयुक्त राष्ट्र में नेतृत्व, बातचीत और कूटनीति में युवा मानसिकता विकसित की जाएगी। इसका लक्ष्य दुनियाभर के युवा नेताओं को शामिल करना है और वैश्विक दुनिया में मानव सुरक्षा एजेंडा विषय के साथ विचारों को साझा करने के लिए एक मंच प्रदान किया जाएगा।

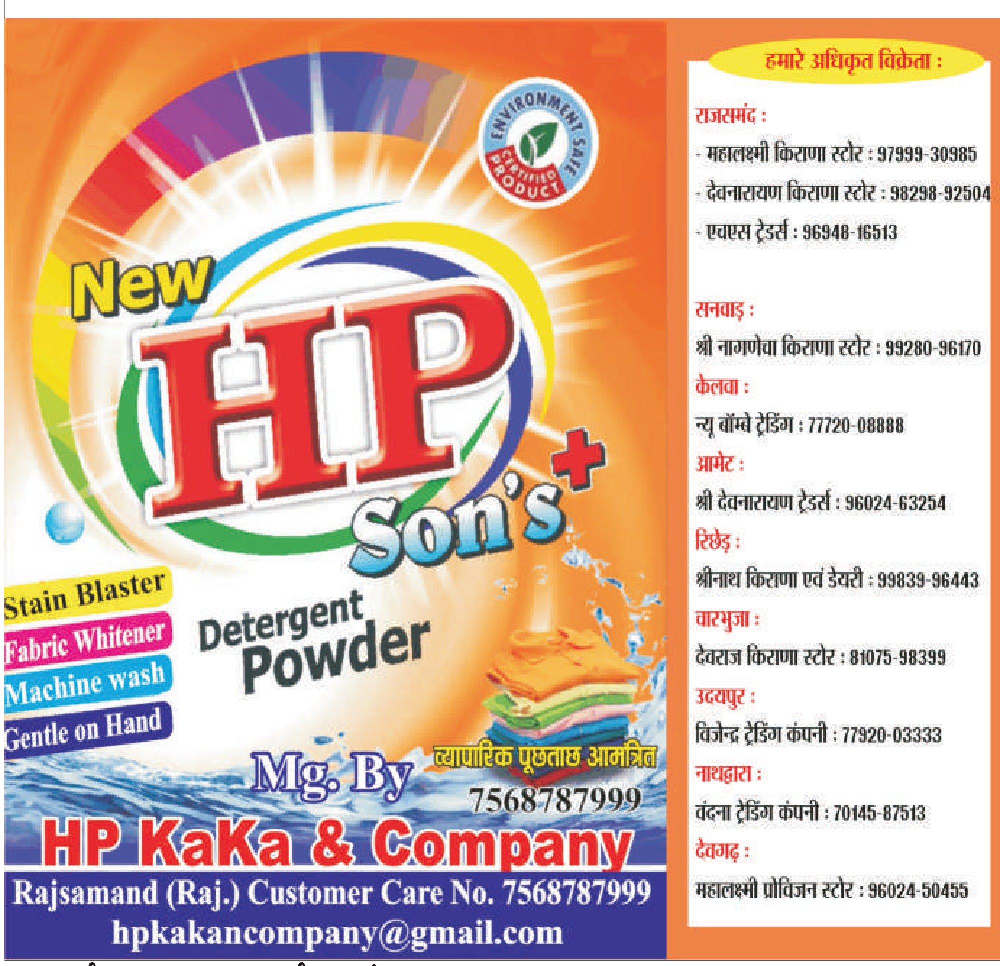

सादर अनुरोध

पाठकगणों से अनुरोध है कि ज्यादातर पाठकों के **जयवर्द्धन पत्रिका** की वार्षिक सदस्यता पूरी हो चुकी है। इसीलिए वार्षिक सदस्यता के लिए **जल्द 200 रुपए या तीन वर्ष की सदस्यता के लिए 500 रुपए जमा करवा कर** शक्ति स्पोर्ट्स शास्त्री मार्केट कांकरोली अथवा हमारे प्रतिनिधि से रसीद प्राप्त कर सदस्यता नवीनीकरण करवाएं।

संपर्क : 94142-39648

राज रौ होकम

इस्कूलां खुलवा रा दन आया ने सरकारी होकम वियो कै जे टाबर भणवा नी जावे, वणां ने लावणा ने भणावणा है। एक गाम मे माड़साब टाबरां ने हेरता- हेरता एक करसा री पोळ रे हामे ढब्या। माड़साब ने देखी ने करसो बारणे आयो ने पूछ्यो- थें किंकर आया ?

माड़साब बोल्या आपणे गाम रा जै टाबर भणवा नी आवे, वणां ने लेवा आया हां। करसे पूछ्यो के अणी वरस छोरा ने दाळ बाटी ने घूघरी वणावणोइज सीखा वोला के भणाई करावोला ? पेल्या वाळा माड़साब घूघरी वणावतां खवावता हा, अबे थें दाळ बाट्यां ने रोट्यां वणावा री भणाई करावा लागा हो ?

आखो गाम आ वात जाणे के माड़साब इस्कूल में आवे ने छोरा ने लारे लेईन छाणा, लूण, मरचां, आटो, दाळ ने तेल लेवा परा जावे। घड़ी डोड घड़ी पछे छोरा रे माथे सामान लादीन पाछा इह्यकूल पूगे। टाबरां ने दाळ बाट्यां वणावा ढूकावे। अणां ने भणावे थोड़ा ने नवरा कामा में रगड़े वत्ता। खाणो वण्यां पछे वणां ने जीमावे ने माड़साब जीमताइज वेला। ठामड़ा- ठीकरा मंझावे, पाछा ठकाणे मेलवा जावे। पछे साफ सफायां करावे। इह्यकूल रो टेम तो यूइज पूरो वेई जावे। भणावे कणी दाण ?

करसो केवतो जाई र्‌योहो- इह्यकूल वणती दांण गाम रा संगळा मनखां आ वात होचीन रिप्या दीदा हा के गाम रा टाबर भणी पढीन कमावा- खावा जोगा वणेला। म्हारा मोटका छोरा ने भणवा मेल्यो, पांच वरस वगाड्या पण पोथी वांचणो नी आयो। हारी थाकींन म्हे वणी ने काम धंधा में लगायो। आज व्हो कमावा जोगो है। म्हूं गाम रा हेठजी री दकान माथे दो वरस भण्यो ने बारखड़ी सीधो पावड़ा, होई पूणा पचोतर, हवाया, डोडा, ढीया, ऊंटा, संकळा सीखे ग्यो। माड़साब ! थें कतरी तांई भण्या हो ?

माड़साब बोल्या- होळमी ताई, तो थाने मोटरां, टरकां, टेकटर, कार हांकणी तो आवती वेला ? माड़साब नाड़ डोलाई के हांकता कोनी आवे, पण थें अतरी वातां म्हाने कां पूछ रिया हो ?

करसो बोल्यो के म्हारो मोटको छोरो संगळी गाड्यां हांकणी जाणे है। म्हने लागे के थांरी इह्यकूल में वणी चार- पांच वरस नी वगाड़्या वेता तो व्हो हवाजाज हांकणी परी सीखतो। थें तो घूघरी के दाळ बाट्यां वणावणी ने खाणी जाणी हो। गाम रा टाबरां ने इह्यकूल में ले जाइन कई करोला ? अश्या काम करणा तो अठेई सीख जावेलां। आप तो पधारो ने जे छोरा धूळा में रमी रिया है, पेल्या वणां ने परा भणावो।

माड़साब आगळी पोळ में वळया। वठे व्याव- मांडा रो काम वेई रियो हो। माड़साब ने देखीन एक जणो बोल्यो- वींद रे साफो अणां हेडमासाबुं परो बंदावा, आछो बांदेला। वणां कियो के म्हूं साफा बांधणो नी जाणुं। दूजा माड़साब बोल्या के टाई बांधणी वे तो मने गाठां लगावतां आवे है। तो म्हारे बळदां रे मोहरी रे गांठा लगाई दो, करसो बोल्यो।

माड़साब एक दूजा रो मुंडो देख्यो ने कियो- आगे परा खसको अतराक में एक आदमी बोल्यो, जावाऊं पेली म्हारी एक वात सूंणता जावो, म्हाने आखो दन इस्कूल में धुंवों निकळतोईज दीखे। यूंईज दाळ बाट्यां वणावता रिया तो एक दन इह्यकूलां रो धुंवों परो निकळेला। दूजो बोल्यो के अणी में माड़साब कई करे ? ऐ तो भळाया काम करें, अबे गेले चलावो के घास कटावो। दस सूं पांच तांई राज री मरजी वे वे व्हो करावो।

तीजो फेर तड़ाक देश्यां रो बोल्यो- भणाई भलेई तेल लेवा जावे। अणीज तरेऊं टाबर इह्यकूलां में बाट्यां फेरता रिया तो ऐ सरकारी बाट्यां एक दन परी बळणी है। आ वात म्हारी थें हिवड़ा में राखजो ने आज हांझे अठे जीमवा पधार जो, म्हारे टाबरां रो व्याव है। वींद रो बापू बोल्यो। दोई माड़साब मुंडो वगाड़ीन गेले विया। अर केवा लागा- गामरा मनख तो आपां सूं बाथ्ये आवे। वातां तो हांची केवे पण आपां कई करी सकां ? राज बदले अर राग परो बदळे। हींजरणो तो आपांने पड़े।

जवानसिंह सिसोदिया
वरिष्ठ साहित्यकार, नाथद्वारा

सुभाष पब्लिक सीनियर सेकण्डरी स्कूल, धोइन्दा
* विद्यालय के गौरव *
सत्र 2012-13 दसवीं बोर्ड जिला मेरिट में तृतीय स्थान
रवि कुमावत 92.33%
सत्र 2013-14 दसवीं बोर्ड राज्य स्तरीय मेरिट में 12वां व जिला मेरिट में 2 स्थान
देवेन्द्र गायरी 95.67%
सत्र 2014-15 12वीं विज्ञान बोर्ड जिला मेरिट में 12वां स्थान
काजल कुमावत 90.20%
सत्र 2014-15 मा.शि. बोर्ड 10वीं कक्षा जिला मेरिट में 10वां स्थान
अजयपाल सिंह राणा 94.17%
सत्र 2015-16 मा.शि. बोर्ड 10वीं कक्षा जिला मेरिट में 16वां स्थान
भरत कुमावत 92.83%
सत्र 2015-16 मा.शि. 10वीं बोर्ड की गौरवशाली प्रतिभाएं
नाजिस डायर 92.00%
सत्र 2016-17 मा.शि. 10वीं बोर्ड की गौरवशाली प्रतिभाएं
दिव्या कुमावत 96.33%
सत्र 2016-17 मा.शि. 10वीं बोर्ड की गौरवशाली प्रतिभाएं
प्रिन्स दवे 92.67%
राजसमन्द जिले में श्रेष्ठतम विद्यालय की ओर अग्रसर
प्रवेश प्रारम्भ सत्र 2019-20
कला वर्ग : इतिहास, भूगोल, संस्कृत साहित्य, अंग्रेजी साहित्य राजनैतिक विज्ञान, चित्रकला, संगीत, अर्थशास्त्र
वाणिज्य वर्ग : लेखाशास्त्र, अर्थशास्त्र, व्यवसाय अध्ययन कम्प्यूटर विज्ञान
विज्ञान वर्ग : भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीवन विज्ञान, गणित, कम्प्यूटर विज्ञान
अंग्रेजी माध्यम नर्सरी से 12वीं तक [कला, वाणिज्य, विज्ञान विषय]
हिन्दी माध्यम नर्सरी से 12वीं तक (कला, वाणिज्य विज्ञान विषय)
आर. के. हॉस्पीटल के पास, गायरिया वास रोड़, हाउसिंग बोर्ड, धोइन्दा, राजसमन्द
फोन : 02952-220403 मो. 9460446756, 9414173503 Email : sps.dhoinda@gmail.com

Tension®
Tension Tower
NoTension
Tension
Durgesh Singh Bhati
7230059101
Bhupendra Singh Bhati
8769955630
Manufacture & Wholesaler of jeans, Shirt & Readymade Garments
999 में 4 शर्ट
999 में 2 जिंस
Shop No. 2, 100ft. Road, In Front of Kawadiya Hospital, Rajsamand (Raj.)
Tel. : 02952-221144 E-mail : tensionjeans1993@gmail.com

vedanta
transforming elements

हिन्दुस्तान ज़िंक
पर्यावरण के क्षेत्र में विश्व की #1 कंपनी
– डाउ जोन्स सस्टेनेबिलिटी इंडेक्स 2018*

यूके FTSE4GOOD इमरजिंग इंडेक्स में शामिल
विश्व की 9वीं सबसे बड़ी चांदी उत्पादक कंपनी
सरकारी कोष में ₹11563 करोड़ का योगदान (राजस्व का 52%)
रॉयल्टी, कर और लाभांश के माध्यम से

HINDUSTAN ZINC
Zinc & Silver of India

HINDUSTAN ZINC LIMITED
Regd Office : Yashad Bhawan, UDAIPUR-313 004 PBX No. 0294-6604000, CIN-L27204RJ1966PLC001208, www.hzlindia.com

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : C/O **शक्ति स्पोर्ट्स,** शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला–राजसमंद, 9414239648, 96729 94705
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

To

Book Post